।। ॐ श्री सत्नाम साक्षी ।।

समाचार-पत्र

ई-पेपर

प्रेम प्रकाश सन्देश

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मासिक समाचार पत्र

15 जनवरी 2026 | वर्ष 18 अंक 10

कुल पृष्ठ - 33 | वार्षिक शुल्क : ₹ 200/- (भारतवर्ष में), ₹ 2000/- (विदेश में), एक प्रति ₹ 20/-

सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी

यह छन्द कवि धूमराय द्वारा बनाया गया है। कवि ने अपने इस छन्द में शहरों के नामों के साथ बड़ा भारी अर्थ भी भर दिया है। अर्थ यह है कि पूर्व माने विदेशों से कमा कर लाया गया धन पश्चिम में बैठ कर खा रहे हो, आगरे के व्यापार को भी छोड़ दिया। कुछ कमा कर नहीं लाये, क्योंकि रास्ते में दिल्ली के दलालों ने आगरे के सौदे व व्यापार को बिगाड़ दिया। फिर आपको तीर्थ करने की इच्छा हुई कि अब तीर्थ कर अपने घर जाऊँ, जो पटियाला शहर के पास ही जगादरी का तीर्थ है, परन्तु पटियाला राज्य की सेना से डरकर उस तीर्थ का दर्शन भी कर न पाये। फिर आपने सोचा कि सहारनपुर के रास्ते से जाकर हरिद्वार में पहुँच कर गंगा माता का स्नान कर आऊँ। इसी बीच आपके साथी, जो आपसे आकर मिले थे, वे आपको कहने लगे चलो तो लाहौर से घूम कर आयें। साथियों की खट-पट होने से हरिद्वार के महान् तीर्थ की यात्रा भी आप न कर सके, तब आपने श्री अमृतसर में गुरु नानक साहेब के दरबार के दर्शन करने का संकल्प किया, परन्तु वेरवाल स्टेशन को पार न कर सके। इस कारण यह तीर्थ भी आप न कर सके। फिर ऐसे ही भटक कर घर वापस आ गये।

सिद्धान्त बतलाते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि यह जीव पूर्व यानी पिछले जन्मों में किये गये शुभ कर्मों के फल को इस जन्म में बैठ कर खा रहा है। "आगरे की खेप" माने यह जीव भविष्य को सुधारने अर्थात् परलोक को बनाने का कुछ भी साधन नहीं करता। अगर कभी इस जीव को परलोक को बनाने का विचार आया भी तो "दिल्ली के दलालों" माने दिल के दलीलों (संकल्प-विकल्पों) ने शुभकर्मों रूपी सौदे को ही बिगाड़ दिया। "पटियाले के लूटने से", में "पट" माने नरम, "आला" माने स्थान, अर्थात् अन्तःकरण, जिसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकारों रूपी जो मन राजा की सेना रहती है, उन विकारों रूपी सेना ने जीव को चारों ओर से घेर रखा है। इसलिये "जगादरी" माने यह जीव संसार में आदर-सत्कार को भी पा न सका। एक तरफ तो यह दशा होने लगी दूसरे तरफ "संगी और साथी तेरे नित ही लाहोर कहें", माने परिवार के लोग इस जीव को बार-बार यही कहने लगे कि ले आओ और भी ले आओ। तमाम संसार के झंझटों से तंग आकर इस जीव ने सोचा कि भला हरिद्वार का तीर्थ तो कर आऊँ। "सहारनपुर के रास्ते से हरिद्वार जाइय" यहाँ "सहारनपुर" माने सहन करना है, अर्थात् हर बात को सहन करने से ही तो "हरिद्वार" माने हरि के दर्शन हो सकते हैं। परन्तु सहन शक्ति के अभाव के कारण इस जीव को भगवान के दर्शन भी न हो सके।

अपने विचारों को व्यक्त करते हुए सन्त धूमराय जी कहते हैं कि "तजो वेरवाल सब" ऐ जीव अब तमाम वैरभाव को छोड़कर "चित्त श्री अमृतासर में लगाइये" अर्थात् अपने मन को अमृतसर माने ब्रह्मानन्द डुबालो । परन्तु ऐ

शेष पेज नं. 2 पर...

पेज नं. 1 से आगे...

जीव आपने सन्तों-शास्त्रों का आदेश न मान कर ऐसे ही अपना सारा जन्म व्यर्थ खो दिया। इस विषय पर बहुत से भजन गाये, सब प्रेमी लोग प्रेम में इतने तो मस्त हो गये जो समय का पता तक न चला। सत्संग करते रात का एक बज गया, फिर राम-नाम की धुनि लगा कर गुरु महाराज जी ने सत्संग समाप्त किया। तत्पश्चात् भोजन पाकर जाकर आरामी हुए।

दूसरे दिन प्रातः सवेरे मुरलीधर के बड़े भाई श्री कीमतराम जी ने गुरु महाराज जी के पास आकर और विनय कर कहा कि स्वामी जी ! आप जरा मुरलीधर को समझा दें तो वापस घर चले। यह सुन कर गुरु महाराज जी कहने लगे कि हमने स्वयं पहले से ही समझाया है कि माता-पिता की आज्ञा में रहो। हम इसे रोकते नहीं हैं। आप इसे भली ले जाओ। फिर कीमतराम जी मुरलीधर को बाँह से पकड़कर डाँट-डपट कर अपने घर ले गये। सद्गुरु महाराज जी भिरकण गाँव में सात-आठ दिन रह कर फिर सबसे विदा होकर प्रातः सवेरे अब्दू गाँव को चल पड़े और गाते-बजाते अब्दू गाँव को पहुँच गये। फिर सायंकाल को बगीचों की सैर के बाद गुर महाराज जी ने सत्संग-मण्डप में आकर सत्संग आरम्भ किया। सत् उपदेश की वार्ता चला कर कहने लगे कि यह मनुष्य शरीर प्रभु के भजन हेतु ही मिला है।

सवैया -

सन्तन को सत्संग बड़ो मिल, सन्तन से भव सिंध तरो रे।
जो सत्संगति नाहिं बने तो, नाम जपो कुछ दान करो रे।
जो यह दोनों कर न सको तो, ना शिर पापन पोट धरो रे।
पापन ते तुम नाहिं डरो तो, इस जीवन ते डूब मरो रे।

उपर्युक्त पदों को समझाते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि निष्काम निर्मान सन्त-महात्माओं, तत्त्वज्ञानियों का जो सत्संग है, वह सर्वोत्कृष्ट सर्वोच्च साधन है, उन बताये गये साधनों का अच्छी रीति से अनुष्ठान कर और आत्मज्ञान को पाकर इस भव सागर को गोपद की तरह पार कर अपने आदि अमर घर में जाकर विश्राम करो। परन्तु अगर आपके द्वारा सन्तों का सत्संग नहीं किया जा सकता, तो फिर भगवान का भजन, दान, स्नान आदि शुभ कर्म कर स्वर्गलोक के सुखों को प्राप्त कर सुखी हो जाओ। अगर ये दोनों कार्य आपसे नहीं हो सकते हैं तो पाप कर्म कर नरक के वासी तो मत बनो। सदा पाप कर्मों से डरते रहो। अगर आप पापों से भी नहीं डरते तो फिर इस जीवन से मरना शत बार अच्छा होगा।

सन्त लोग रात-दिन पुकार करते हुए कह रहे हैं कि यह मनुष्य जीवन पुण्य कर्मों को करने के लिये ही मिला है। परन्तु यदि पुण्य नहीं हो सकते हैं तो पाप तो मत करो। मनुष्य का कर्तृतव्य है दान करना, सो अगर आप स्वयं दान नहीं कर सकते हो तो दूसरों को तो दान करने से मत रोको। मनुष्य का कर्तृतव्य है सब जीवों को सुख पहुँचाना, अगर आप किसी को सुख नहीं पहुँचा सकते हो तो किसी को दुःख तो मत पहुँचाओ । क्योंकि बिना कारण किसी भी जीव को पीड़ा पहुँचाना महापाप बताया गया है। अपने प्रवचन को जारी रखते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि इस संसार में चार प्रकार के मनुष्य होते हैं। यथा (१) बेर (२) सुपारी (३) बादाम और (४) किशमिश ।

पहला बेर - जैसे बेर बाहर से बहुत सुन्दर दिखलाई पड़ता है, परन्तु अन्दर कठोर खोखली से भरा रहता है। वैसे ही बहुत से लोग बाहर बहुत नम्र स्वभाव वाले और मीठा बोलने वाले होते हैं, परन्तु अन्दर से वे बहुत कठोर होते हैं। उन लोगों का हृदय झूठ, कपट, दम्भ, पाखण्ड, पाप आदि से भरा रहता है। अपना स्वार्थ साध लेने के बाद फिर धक्का दे कर छोड़ देते हैं। दूसरे सुपारी जैसे। जैसे सुपारी बाहर-भीतर से कठोर होती है। वैसे ही कई लोग बाहर-भीतर से क्रोधी स्वभाव के होते हैं। तीसरे बादाम जैसे। जैसे बादाम बाहर से कठोर होता है, व अन्दर की जो गिरी होती है वह नरम व मीठी होती है वैसे ही कुछ मनुष्यों का स्वभाव बाहर से बहुत कड़ा होता है, पर अन्दर से वे बहुत ही दयालु एवं परोपकारी होते हैं। चौथा किशमिश की तरह। जैसे किशमिश अन्दर-बाहर से नरम व मीठी होती है। वैसे ही कुछ मनुष्य अन्दर और बाहर एक समान सरलात्मा सत्य व मीठा बोलने वाले परम उदारी होते हैं। जो सब जीवों के हित साधन में ही लगे रहते हैं। किशमिश स्वभाव वाले लोगों व भगवान के बीच में कोई भी अन्तर नहीं है, है, दोनों एक रूप हैं। इस विषय पर बहुत से भजन बोल कर अर्थ समझा कर राम-नाम की धुनि लगा कर गुरु महाराज जी ने रात को एक बजे सत्संग समाप्त किया।

शेष अगले अंक में...

।। ॐ सत्नाम साक्षी ।।
श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मुखपत्र

प्रेम प्रकाश सन्देश

15 जनवरी 2026

वर्ष 18 | अंक 10

मंगल आशीष

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज
सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज
सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज
सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज

संस्थापक
सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

संरक्षक–मार्गदर्शक–प्रेरणास्त्रोत
सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

सदस्यता शुल्क

अवधि	भारत में	विदेश में
एक वर्ष के लिये	₹ 200	₹ 2000
दो वर्ष के लिये	₹ 400	₹ 4000

मनीआर्डर भेजने व पत्र व्यवहार के लिये पता :
व्यवस्थापक, प्रेम प्रकाश सन्देश
प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ,
लश्कर, ग्वालियर-474001 (मध्यप्रदेश)
मोबा. 0751-4045144
सम्पर्क समय : प्रात 8 से 10 बजे तक (तात्कालिक व्यवस्था)
e-mail : premprakashsandesh@gmail.com

Bank Facility

आईडीबीआई बैंक में आप कोर सुविधा/मनी ट्रांसफर के माध्यम से भी निम्न खाते में शुल्क जमा कराके फोन 0751-4045144 पर अथवा व्हाटस् एप नम्बर 8989701236 पर सूचना दे सकते हैं.

A/c 92610010000468
Net Bankig : IFSC: IBKL0000545
Editor Prem Prakash Sandesh, Gwalior

नई सदस्यता अथवा नवीनीकरण के लिये सदस्यता शुल्क आप मनीआर्डर/कोर बैंक माध्यम के अलावा सद्गुरु महाराज जी की यात्रा के समय बुक स्टॉल पर व देश भर के विभिन्न शहरों में हमारे प्रतिनिधियों के पास जमा कर सकते हैं. इसके अलावा परम पावन गुरु धाम श्री अमरापुर दरबार (डिंडु), जयपुर के श्री अमरापुर सत्साहित्य केन्द्र में प्रतिदिन एवं रविवार प्रातः 8 से 12 व प्रत्येक गुरुवार-शनिवार सायं 5 से 8 बजे तक श्री कुमार चन्दनानी, श्री नारायणदास रामचंदानी, श्री निहालचंद तेजनानी व श्री अशोक कुमार पुरसानी के पास जमा किया जा सकता है.

कविता

लो फिर बसन्त ऋतु आई.....

कोहरे की चादर ली समेट, पाला ठिठुरन रक्खे लपेट
गुनगुनी सुनहरी धूप बिछा मौसम ने ली अंगड़ाई
लो फिर बसन्त ऋतु आई।
झूमे पल्लव पंछी चहके, बेला गुलाब जूही महके
भर फूलों की सुगंध से आंचल पवन फिरे बौराई
लो फिर बसन्त ऋतु आई।
मंजरी शाख़ पर रही झूल, उत इठलाए जंगली फूल
वन में पलाश चम्पक फूले केतकी खिली इतराई
लो फिर बसन्त ऋतु आई।
सरसों ओढ़े पीली चुनरी, हर उपवन रंग भरी गगरी
तितली के लख परिधान नवल हर कली हँसी मुस्काई
लो फिर बसन्त ऋतु आई।
श्यामल भँवरों की सुन गुन गुन, सरगम ले रचते नित नव धुन
कोकिल की सुमधुर कुहू कुहू से गूँज उठी अमराई
लो फिर बसन्त ऋतु आई।
खेतों में है नव स्पन्दन, बालियाँ कर रहीं अभिनन्दन
धरती के ममतामय आंचल ने प्रेम सुधा बरसाई
लो फिर बसन्त ऋतु आई।
है छवि विराट की कण कण में, रूप बदलती क्षण क्षण में
बाँहें फैला झोली भर लो अनमोल निधि है पाई
लो फिर बसन्त ऋतु आई।
बेरंग जीवन में रंग भर दो, बिसरे स्वप्नों को नव पर दो
नीले नभ में भर लो उड़ान यह नवल संदेशा लाई
लो फिर बसन्त ऋतु आई।

अनुक्रमणिका

अनुक्रम	विषय	पृष्ठ
01.	सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी	1–2
02.	सद्गुरु टेऊँराम महाराज की ध्यान तप–साधना से हिंसक जीव हुए अहिंसक	4–5
03.	गंगा अमृततुल्य है	5
04.	बसंत ऋतु रंगवारी रे...स्वामी सर्वानन्द जी महाराज हृदयोद्गार	6–10
05.	माता सरसवती देवी वन्दना	11
06.	सद्गुरु टेऊँराम रचित बसंत महिमा भजन	12
07.	बसंत पंचमी विशेष भजन	13–14
08.	प्रेम प्रकाश आश्रम चैन्नई व रामेश्वरम मेला समाचार–चित्र दर्शन	15–18
09.	भारज जननी कविता	18
10.	जानने योग्य–सनातन धर्म की महत्वपूर्ण जानकारी	19–21
11.	भारत के प्रसिद्ध केलेण्डरों–पंचांगों में सांई टेऊँराम जयन्ती–पुण्यतिथि प्रकाशित	21
12.	जानने योग्य–भगवान शिव के 35 रहस्य	22–24
13.	रात 12 बजे मनाते हैं जन्मदिन तो सावधान हो जायें ? दो अनमोल हीरे	25
14.	नर्मदेश्वर शिवलिंग	26
15.	कन्हैया के आभूषण (प्रेरक प्रसंग)	27
16.	चैत्र मेला 2026 सूचना	28
17.	समाचार डायरी	29–30
18.	अमरापुर गमन, भजन श्री हरकेश वधवा	31
19.	व्रत–पर्व–उत्सव	32
20.	पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज एवं संत मण्डली का यात्रा कार्यक्रम	32
21.	ब्रह्मदर्शनी (सिंधीअ में समुझाणी)	33

सद्गुरु टेऊँराम की ध्यान तप साधना से हिंसक जीव हुए अहिंसक

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की अद्भुत महिमा

जपे जपावे नाम हरि, हर हालत हर वेल।
कहे टेऊँ तिस पुरुष से, होवे हरि का मेल।।

ब्रह्म में एकाकार हो चुके संत सत्पुरुष सदा ही परमात्मा के ध्यान में लीन रहते हैं, संसार दुनिया की बातों से दूर वे सब में समत्व दृष्टि भाव रखकर, अपनी दिव्यता से सब जीवों के मन में भी प्रेमभाव जाग्रत करते रहते हैं.

यह बात श्री सद्गुरु महाराज जी के युवावस्था की है जब श्री गुरुदेव सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज जन्म स्थान खण्डू गाँव में अपने घर परिवार के साथ रहते थे. एक दिन श्री गुरु महाराज जी सिंधु नदी के किनारे भ्रमण करते हुए एक बियाबान लेकिन मनोहारी जंगल में पहुँचे, जहाँ पर भयानक हिंसक जीव-जन्तु रहते थे. यह स्थान श्री गुरु महाराज जी को ऐसा भाया कि एकांतवास के लिए उन्होंने पर्ण की कुटिया बनाकर वहीं पर निर्विकल्प समाधि लगा ली. इधर खण्डू में माता कृष्णा व परिवारजनों ने शाम होने के बाद श्री गुरु महाराज जी को बहुत ढूँढा, लेकिन आप कहीं पर नहीं मिले. इस प्रकार कुछ दिन गुजर गये.

लगभग एक महीने पश्चात् परमात्मा की इच्छा से ऐसी विचित्र घटना घटी कि खण्डू का भाई मेंघराज दरिया किनारा लेकर अपने घर को लौट रहा था, संध्या का समय हो चुका था. जंगली जीवों से भय भी लगने लगा था कि एकाएक उस मार्ग में एक कुटिया दिखाई पड़ी. बियाबान क्षेत्र में कुटिया! विस्मय में भरकर मेंघराजमल उत्सकुतावश उस झोपड़ी के समीप गया तो एक दिव्यतम आभा का एहसास उसे होने लगा और उसके हृदय में विचार आया कि हो न हो यहाँ कोई महान आत्मा निवास कर रही है, इसी विचारधारा के चलते अंदर गया तो क्या देखता है कि ब्रह्मऋषि विराज रहे हैं! पहचाना तो ये क्या? श्री गुरु महाराज जी!!!

ध्यान योग में समाधिस्थ बैठे हुए थे उनके चारों ओर सूर्यसम तेजस्वी प्रकाश सा फैल रहा था. ऐसा अलोकिक सुंदरतम दृश्य देखकर मन में पूर्ण श्रद्धा भक्ति रखकर, आँखों में अश्रुधार बहाते हुए सद्गुरु महाराज जी के श्रीचरणों में गिर पड़ा और विनीत होकर बोला कि भगवन्! हमारा आज पूर्व जन्म का कोई भाग्योदय हुआ है जो अचानक ही आपका पावन दर्शन इस नदी के किनारे हुआ. भगवन्! आपको भाई टहलराम व अन्य प्रेमियों ने काफी ढूँढ़ा किन्तु आप नहीं मिले. अब भी आपके वियोग में सब लोग उदास बैठे हुए हैं. अभी तक कई प्रेमी व आपके परिवारजन आपकी खोज में लगे हुए हैं. माता कृष्णादेवी को आपके जाने का काफी विचार हो गया है इसलिए भगवन्, आप हमारे साथ चलने की कृपा करें. सब प्रेमियों को अपने पावन दर्शन से कृतार्थ करें. इतना कहकर मेंघराज प्रेम में आकर जोर जोर से रोने लगा.

श्री गुरु महाराज जी ने प्रेम से सनी ओजस्वी वाणी में आश्वासन देते हुए कहा कि हे वत्स! हम सदैव आप लोगों के साथ हैं. पहले यह बताओ कि आपका यहाँ पर आना कैसे हुआ? इतना सुनकर मेंघराज ने सारी हकीकत सुनाई और कहने लगा आपका दर्शन पाकर ऐसे प्रसन्न हुआ हूँ, जैसे मोर बादलों को, चकोर चन्द्रमा को, पतंग दीपक को, भ्रमर फूलों को, मछली जल को देखकर प्रसन्न होती है. अब आप कृपया जल्दी हमारे साथ चलकर घर पधारें. इतना सुनकर श्री गुरु महाराज जी बोले, हे वत्स! हमें यहाँ पर एकान्तवास में रहकर परमात्मा का भजन करना है. आप भली अपने गाँव पधारो. भगवन्! आप नहीं चलेंगे तो मैं भी यहाँ आपके ही श्रीचरणों में बैठा रहूँगा. श्री गुरु महाराज जी मुस्कराकर बोले, यह बात तो सबसे श्रेष्ठ है. आप भी सिन्धु नदी के तट पर परमात्मा का भजन करो.

भाई मेंघराज किसानों से बोला तुम लोग पिताजी से कह देना आप मेरी कुछ भी चिन्ता न करें. मैं श्री गुरु महाराज जी के साथ रहूँगा. इधर मेंघराज श्री गुरु महाराज जी की आज्ञा पाकर दरिया के तट पर परमात्मा का भजन करने लगा.

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश गुरु के बिना आत्मज्ञान नहीं होगा। बिना आत्मज्ञान के अनात्म देह का अभिमान संशय और भ्रम दूर नहीं होंगे। बिना भ्रम संशयों के दूर हुए शान्ति और सुख की प्राप्ति नहीं होगी।

रात्रि के ८ बजे मेंघराज को कुटिया में बुलाकर श्री गुरु महाराज जी कहने लगे, हे वत्स! अब रात्रि का समय है इसलिये कुटिया में ही भजन ध्यान करो. यहाँ पर रात्रि के समय हिंसक जानवर आते हैं, किन्तु आप उनसे भयभीत न होना. भाई मेंघराज कुटिया के एक कोने में बैठकर भजन करने लगा. सद्गुरु महाराज जी अपनी निर्विकल्प समाधि में लीन हो गये.

प्रातःकाल श्री गुरु महाराज जी मेंघराज से पूछने लगे. आप रात्रि को भयभीत तो नहीं हुए? मेंघराज कहने लगा भगवान्! **लगभग 10-11 बजे तक यह दास निश्चिन्त होकर भजन करता रहा. किन्तु उसके बाद भयानक जानवरों की आवाजें सुनाई दीं. दरवाजे पर क्या देखा कि हिंसक जीव जो परस्पर शत्रु भाव रखते हैं, आपस में प्रेमपूर्वक खेल रहे थे.** पहले तो काफी भय हुआ किन्तु आपकी ओर देखने से भयता निवृत्त हो गयी, आप श्री के होते किस प्रकार का भय? और आराम से भजन सुमरन करने लगा.

ब्रह्माकार में स्थित ब्रह्मर्षि महायोगी सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की ऐसी आश्चर्यजनक लीला देखकर मेंघराज गद्गद् कण्ठ से कृतार्थ होकर कहने लगा- धन्य हुआ मेरा जीवन जो आप जैसे महान गुरुदेव का पावन सानिध्य मिला. **आपके अद्भुत आभा मण्डल के प्रभाव से हिंसक जीव जो परस्पर एक दूसरे को खाने के लिए लालायित रहते हैं, वे भी यहाँ प्रेमपूर्वक किलोंलें कर रहे थे.** ये थी भक्ति की शक्ति!

जिनके दर्शन मात्र से ऐसे प्राणी भी जो अपना हिंसक स्वभाव छोड़कर प्रेमभाव में लीन होकर शत्रु को भी स्नेह करने लगें ऐसे परम गुरुदेव सर्व जीवों के तारनहार सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पावन श्रीचरण कमलों में अनन्त नमन-वन्दन!

-साधक, श्री अमरापुर दरबार (डिब्), जयपुर

गंगा अमृततुल्य है

कल्याण 'गंगा अंक 2016' विशेषाँक में प्रकाशित प्रसंग ज्यों का त्यों दिया जा रहा है

एक समय अकबर ने अपने दरबारियों से पूछा- बताओ, किस नदी का पानी सबसे अच्छा है? सभी दरबारियों ने एकमत से उत्तर दिया- गंगा मैया का पानी सबसे अच्छा होता है, लेकिन बीरबल ने कोई जवाब नहीं दिया. उसे मौन देखकर अकबर बोले- बीरबल, तुम चुप हो? बीरबल बोले- बादशाह हुजूर! पानी यमुना नदी का अच्छा होता है. बीरबल का उत्तर सुनकर बादशाह को बड़ी हैरानी हुई और बोले कि तुमने ऐसा किस आधार पर कहा, जबकि धर्मग्रन्थों तो गंगाजी का जल ही सबसे शुद्ध तथा पवित्र बताया गया है. बीरबल ने कहा- हुजूर! मैं भला पानी की तुलना 'अमृत' से कैसे कर सकता हूँ, 'गंगाजी में बहने वाला पानी केवल पानी नहीं अपितु 'अमृत' है, उसकी तुलना पानी से नहीं की जा सकती, साक्षात् भगवान् के श्रीचरणों में उसका अवतरण हुआ है. ये साक्षात् भगवत्स्वरूपा हैं.

बादशाह अकबर और सभी दरबारी निरुत्तर हो गये और उन्हें मानना पड़ा कि बीरबल सत्य कह रहा है. गंगाजी साक्षात् भगवान् का स्वरूप हैं. इनकी तुलना किसी भी जल से नहीं की जा सकती. उनके दर्शनमात्र से अनेकानेक जन्म-जन्मान्तर के पापों से मुक्ति मिलती है. गंगा मैया तो साक्षात् अमृततुल्य हैं.

प्रेषक :- प्रेमप्रकाशी संत मोनूराम

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश जिसको गुरु कृपा का कण मिल जाता है, उसकी समस्त क्रियाएँ बदल जाती हैं।

बसन्त ऋतु रंगवारी रे .....

तपोनिधि, पुण्य पुंज प्रातः स्मरणीय परम पूज्यनीय सद्गुरू स्वामी सर्वानंद जी महाराज जी के ह्रदयोद्गार

हंसा कहाँ से आया रे, बोलता कहाँ समाया रे
उसका भेद बताओ रे .....।।
शेष, महेश, गणेश न होता, नहीं ब्रह्मा नहीं पानी।
हंसा कहाँ से आया रे .....।।

प्रेम से बोलो हरे राम! ये भजन बड़ा है, यहीं रख देते हैं. ये हंसा बोलता है, ये कहाँ से आया है. माता के गर्भ में कैसे आया फिर शरीर की समाप्ति होती है तो ये कहाँ से आया? कोई कहता है देवता भगवान है, कोई कहता है बुद्धि भगवान है. ये खिड़कवादियों का बड़ा मत है वो कहता है बुद्धि भगवान है क्यों? व्यवहार का ज्ञान, पुरुषार्थ का ज्ञान, बुद्धि के अधीन है. प्रेम से बोलो हरे राम! इसलिए बुद्धि भगवान है. कोई कैसा कहता है और कोई कैसा कहता है. हे नचिकेता..

तांको सुनकर जीव अज्ञानी, संसे मन में धरते हैं।

इसलिए ये सुनकर अज्ञानी जीवों को यह संशय हो जाता है कि भगवान कौन है.

इस कारण से पूरे गुर बिन, भेद भ्रम नहीं जाता है।

पूरण सत्गुरु नाम किसका है. ब्रह्मनेष्ठी- ब्रह्मश्रोत्री दोनों से युक्त, उसी के बिगर संशय नहीं जाएँगे, भली भाँति से चित में निश्चय आत्मज्ञान न पाता है. भली भाँति से आत्मा का ज्ञान नहीं होगा. प्रेम से बोलो हरे राम! आत्मज्ञान के बिगर ये जीव सदैव दुःखी रहता है. जब आत्मा का साक्षात्कार होगा. तब ऐसे फलीभूत होगा जैसे इसी बसन्त ऋतु में वनस्पति फलीभूत रहती है. सुगन्धी हो जाती है. ऐसे ही आत्मज्ञान भी एक बसन्त है. रात को बसन्त का सत्संग सुनाया था. बसन्त का सत्संग बहुत अच्छा है. जो आप धीरे-धीरे सुनते रहना.

बसन्त एक सत्संग भी है और बसन्त एक आत्माराम भी है. आत्माराम का जब पूरन ज्ञान होगा, तभी जैसे वनस्पति फुलवारी फूल जाती है, वैसे ही सारी इन्द्रियाँ फूल जाएँगी. प्रेम से बोलो हरे राम! इसमें दैवी सम्पदा की सुगन्धि पैदा होगी. इसी ऋतु में बाहर से क्या होता है-

सूखे तरु भये पत्र अपारे, वन वन फूला बाग-बहारे।
फूल रहीं फुलवारी रे .....।

ऋतु ऋतु में है रंग साहब का बसन्त ऋतु रंगवारी रे, रंगवारी रे।।
बसन्त ऋतु को देखके, भँवरा भये मस्तान।
कह टेऊँ सब त्याग के, खोजत गुल अस्तान।।
आई ऋतु बसन्त की रे प्यारे मेरे मन आनन्द।
नानक साहब मन बसे, की सगली ऋतु बसन्त।।
आई ऋतु बसन्त की रे, भँवरा भये मस्तान।
तन-मन की सुध भूलके, देत ताहि प्रान।।

प्रेम से बोलो हरे राम! इसी बसन्त ऋतु में क्या होता

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी आत्म साक्षात्कार के पश्चात् आप सच्चे आनन्द का अनुभव करेंगे।

है. 'सूखे तरु भये पत्र अपारे' जिस वृक्ष में थोड़ा जीव होगा, उसमें भी पत्ते फूल फल खिल जाएँगे. सारी वनस्पति फुलवारी हो जायेगी. बोलो हरे राम! फुलवारी चमन, बगीचा गुलजार हो जायेगा.

आई ऋतु बसन्त की रे, चमन खिड़ी गुलजार।
स्वामी चिमन में है, सब भँवरे करत गुँजार।।

प्रेम से बोलो हरे राम! 'ऋतु में रंग साहब का, बसन्त ऋतु रंगवारी रे' गुरु महाराज कहते हैं पाँच ऋतुओं में भी रंग अच्छा है किन्तु बसन्त ऋतु बहुत अच्छी है. बसन्त ऋतु के समान कोई ऋतु नहीं है. एक दिन पाँच ऋतुएँ इकट्ठी होकर बसन्त ऋतु के पास आकर पूछने लगीं. क्या कहने लगीं?

ऋतुएँ यों मिलकर पूछयां रे, कौन बसन्त तेरो नाम।
कहाँ लोक सु आयों, कहाँ तेरो विश्राम।।

ऋतुएँ कहने लगीं, हे बसन्त! आप कहाँ से आये. ऋतुराज बसन्त कहाँ है. आप कहाँ से आयी हो मेरे को लज्जा आती है. आप कहाँ से आयी हो. आपका नाम किसने रखा. कहाँ रहते हो. ये सुनाओ खोल के-

ताते बसन्त बोलिया, सुन ऋतु हमरो नाम।
स्वर्ग लोक से आयो, संत मिले विश्राम।।
ज्यों-ज्यों गावन संत जन, त्यों-त्यों हमरो नाम।।

बसन्त ऋतु कहने लगी, हे ऋतुओं सुनो, मैं स्वर्ग लोक से आया हूँ. संतों में रहता हूँ, महात्माओं में रहता हूँ, विवेकी पुरुष में रहता हूँ. बसन्त नाम मेरा संतों ने रखा. प्रेम से बोलो हरे राम! संत बसन्त गाते हैं तो मेरा नाम कीर्ति यश मशहूर हो गया. ये एक दृष्टान्त है. प्रेम से बोलो हरे राम! इसका सिद्धान्त क्या है? बसन्त एक सत्संग और दूसरा आत्माराम तीसरा बसन्त वैराग है. वैराग बसन्त है. वैराग में सुगन्धि है. क्यों सुगन्धि है. क्यों वैराग जैसे बसन्त दुर्गन्ध को दबा देता है, नास कर देता है, तैसे वैराग, संसार के भोग-विषयों के पदार्थ, पाप कर्मों को नास कर देता है. प्रेम से बोलो हरे राम! वैराग बसन्त है. जभी बसन्त होगा, तभी पाँच ऋतु कौनसी शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध ये पाँच विषय लज्जा रूपी होती है. ये पाँच ऋतुएँ कहती हैं, हे वैराग कि आप कहाँ से आये हैं. जो हमें कुछ भी अच्छा नहीं लगता है. प्रेम से बोलो हरे राम! उसको भोग-विषय पदार्थ मीठा नहीं लगेगा, क्योंकि वह त्याग करेगा. कहने लगे वैराग, आप कहाँ से आये हो? वैराग कहने लगे कि मैं स्वर्ग लोक से आये हैं सुख से वैराग होवे ये भी प्रेमियों को सुनाया है कि नौ प्रकार का वैराग- १. पर वैराग, २. अपर वैराग, ३. एक इन्द्रिय वैराग, ४. वशीकरण वैराग, ५. यतमान वैराग, ६. विप्रेत वैराग, ७. तीव्र वैराग, ८. मद वैराग, ९. निबर वैराग. ये नौ प्रकार का वैराग. फिर समेट कर संतों ने रखा, तीन प्रकार का वैराग- उत्तम, मध्यम- कनिष्ठ वैराग.

१. कनिष्ठ वैराग : नाम किसका है? संसार के दुःख से वैराग होवे-अनन्त दुःख है पुत्र का दुःख. धन का दुःख, संसार के दुःख से, जो वैराग होवे वह कनिष्ठ है; क्योंकि फिर सुख मिला तो वैराग चला जायेगा. इसलिए कनिष्ठ वैराग है.

२. मध्यम वैराग : मरने के डर से होता हे जैसे- राजा परीक्षित को हुआ.

३. उत्तम वैराग : सर्वसुखी हो, दुनिया का कोई भी दुःख न हो. और वैराग लगे प्रभु का. जैसे गोपीचन्द को लगा आदि जगत्गुरु शंकराचार्य, गुरुनानक साहब, कबीरदास, सत्गुरु टेऊँराम महाराज को हुआ तथा वलीराम को लगा. वलीराम की कथा कल छोड़ी है, कहाँ छोड़ी है. संत के पास जंगल में

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली गुरु के बिना संसार रूपी समुद्र से पार होना संभव नहीं है ।

आया राज्य छोड़कर वलीराम को वैराग हुआ, छोड़ के वजीरी एक राजा वलीराम था जब वैराग हुआ तब सभी घर बार छोड़कर जंगल में एक महात्मा के पास आये हैं. याद रखना ये कथा यहाँ रखी है. वैराग एक बसन्त है. वैराग में सुगंध है. सत्गुरु महाराज का इस दास ने वैराग देखा ये नजारा उस वैराग का है जो आप देख रहे हैं. गुरु महाराज कहते हैं-

बसन्त ऋतु का देख निजारा, रिल मिल भंवरे करत गुँजारा
सुगन्ध ले सुखकारी रे .....
ऋतु ऋतु में है रंग साहब का बसन्त ऋतु रंगवारी रे, रंगवारी रे।।

प्रेम से बोलो हरे राम! 'ऋतु ऋतु में रंग साहेब का'. सिद्धांत में पाँच ऋतु कौन? शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध. इसी में प्रभु का रंग है. प्रेम से बोलो हरे राम! कितने ही शब्द पर मस्त हैं. ये भी प्रभु का रंग है. अनन्त जीव देखो घर-घर में रेडियो रखे हैं. ये शब्द पर मस्त हैं. कितने ही स्पर्श में मस्त हैं, विषय-भोगों पर मस्त है. कितने रूप पर मस्त हैं जिसको दुःख चाहिए, वो अभी सिनेमा में जावे. सिनेमा में नहीं जाना इसका परिणाम दुःख निकलेगा, फिर आप रोएँगे. ये रजोगुण को हटाओ, फैशन को हटाओ. आप जानते हो इसे आप करो. इसी रूप पर मस्त है, कितने रस पर मस्त हैं, मछली, माँस, शराब, रात-दिन खाने-पीने पर मस्त हैं. चाय भी तीन चार वक्त पीते हैं. बोलो हरे राम! अभी चाय को छोड़ दो. अभी ठण्डी का मौसम चला गया. बसन्त ऋतु आयी है. जितने भाई माई बैठे हो, अगर आप शरीर की अच्छी तरह से परहेज करोगे तो आप बारह महीने बीमार नहीं पड़ोगे. अभी प्रेमियों को कहा- हृदय रूपी कागज पर लिखना, याद करना या लिखना. ऐसे सेवन करोगे तो कभी बीमार नहीं पड़ोगे. कर्मों की गति बहुत विलक्षण है. हर एक मनुष्य को तीन ताकत चाहिए, तीन तंदुरुस्ती चाहिए. मनुष्य का शरीर, बुद्धि, दिमाग की ये तीनों तंदुरुस्ती पर बीमार नहीं पड़ेंगे जिसमें है तो वह दुनिया में जी सकता है. ये तीनों तंदुरुस्ती माँस, मछली के अंदर नहीं है. पहले शरीर की तंदुरुस्ती चाहिए; क्योंकि शरीर बीमार होगा तो क्या होगा, व्यवहार भी नहीं होगा, परमार्थ भी नहीं होगा. शरीर की बुद्धि दिमाग की तंदुरुस्ती चाहिए, तो पहले शरीर की तंदुरुस्ती के लिए इस बसन्त ऋतु में क्या करो. याद करना. सुबह को दो मील बाहर घूमो. बगीचे में घूमो, कसरत करो. कैसे घूमो. पहले दो फर्लांग दूसरे दिन चार फर्लांग, धीरे धीरे बढ़ाते जाओ. सुबह को घूमो. उसी में तंदुरुस्ती होगी. ज्यादा नहीं तो १ मील अवश्य घूमना. बसन्त में बहार होती है. ये शरीर हवा, पानी पर निर्भर है. अगर प्रभु का हुक्म होगा तो हम भी यहाँ आएँगे. तो आप सुबह को घूमो. कैसे घूमो. एक दिन वृन्दावन की कुछ सखी आपस में मिल गयीं. तो एक सखी कहने लगी. आप मक्खन बेचने कहाँ जाती हो. तब सखी ने हकीकत सुनाई. एक सखी वृन्दावन मक्खन बेचने जाती थी, तो वह कहने लगी-

बसन्त ऋतु में प्रातःकाल 2-3 मील पैदल घूमना चाहिये, हो सके तो घर से पैदल चलकर कहीं सत्संग स्थल पर जाकर सत्संग अमृत का पान करें

चलो सखी वहाँ जाईये, जहाँ बसे ब्रजराज।
मक्खन बेचने हरि मिले, एक पंथ दो काज।।

हे सखी! चलो वृन्दावन में, वहाँ मक्खन जल्दी बिक जाता है और भगवान का दर्शन भी होता है दोनों काम हो जाते हैं.

तो हमारा विचार है कि आप सभी यहाँ घूमने आओ. घूमो भी सत्संग का लाभ भी प्राप्त करो. प्रेम से बोलो हरे राम! तो हमारा भी विचार है कि सुबह को चार बजे उठो. यह नियम बनाओ, पहले दो चार दिन तकलीफ होगी फिर अच्छा हो जायेगा. चार बजे उठके फिर यहाँ ६ से ७ बजे तक सत्संग में आओ. सत्संग में वेदान्त योग वशिष्ठ निर्वाण प्रकरण की कथा होगी जिसमें वशिष्ठ महाराज अमृत बाँटते हैं. इसलिये सुबह को यहीं आओ, घूमने से बसन्त की हवा आपके शरीर को स्पर्श करेगी और शरीर की बीमारियों को खत्म करेगी. दूसरा इस बसन्त के ढाई महीना अप्रेल की २० तारीख तक परहेज करना कि खटाई नहीं खाना. रात

बसन्त ऋतु में रात्रि सोते समय खसखस-बादाम-कद्दू का तेल मिलाकर मस्तिष्क की मालिश कर हल्का पतला कपड़ा बाँधकर सोवें. जिससे बुद्धि तेज व विवेक शक्ति बढ़ेगी.

को रोटी कम खाना, अभी भी चाहो कि शरीर की तंदुरुस्ती होवे तो उसके लिए एक बादाम की गिरी रात को मिट्टी के बर्तन में भिगो देवो, सुबह को उठके दातुन पानी करके उस बादाम की गिरी का लाल छिलका उतार दो. और वो सफेद गिरी खा लो, ऐसे दूसरे दिन दो, तीसरे दिन तीन, चौथे दिन चार ऐसे एक-एक गिरी बढ़ाते जाओ, जब दस गिरी हो जावें तो उसमें मिश्री और मक्खन मिला के खाओ. ऐसे चालीस दिन तक चालीस बादाम की गिरी हो जावें खाते रहो, फिर देखना शरीर का रूप कि कैसी तंदुरुस्ती हो जाती है. ये याद रखना, प्रेम से बोलो हरे राम! दूसरा जिसको ये सेवन करना है वो अगर चाय पीता है तो उसको हटा देवें. तीन वक्त चाय पीता है तो एक वक्त पीवे और एक वक्त पीता है तो एक दिन छोड़ के दूसरे दिन पीवे. हर रोज न पीते हैं तो छोड़ देवे यह चाय बीमारी का कारण है. ये शरीर की है तंदुरुस्ती और दूसरी दिमाग की तंदुरुस्ती जिसको चाहिए तो एक छटांक बादाम का तेल, एक छटांक खसखस का तेल और आधा छटांक कद्दू का तेल, ये तीनों तेल मिलाके रखें. रात्रि को जब दूध पीके सोने लगें, तब उस तेल की दो-चार बूंद सिर में डाल के मालिश कराके, पतला कपड़ा बाँध लेवें. घट में घट (कम से कम) दो महीना ऐसे करोगे तो बारह महीना दो साल मगज (दिमाग) की ताकत नहीं जाएगी बहुत ताकत होवेगी. प्रेम से बोलो राम!

यह संसार के अन्दर बहुत पागल हो गये हैं. जाके देखो पागलखाना में भरे पड़े हुए हैं; क्योंकि उनका दिमाग खराब हो गया है. प्रेम से बोलो हरे राम! और बुद्धि की तंदुरुस्ती होगी विवेक से, आत्म शक्ति होगी सत्संग से, वेदांत शास्त्र के पढ़ने से महात्माओं में से वेदान्त की कथा श्रवण करने से बुद्धि की शक्ति विवेक शक्ति बढ़ेगी. इसलिए हे मेरे मन! यह सेवन करें इसी बसन्त ऋतु का बड़ा आनन्द है. तो सारे जीवों के लिए बहुत करके यह भंवरों को प्यारा लगता है.

'बसन्त ऋतु का देख निजारा- रिलमिल भंवरे करत गुंज्जारा, सुगन्ध ले सुखकारी रे।' यह दृष्टांत है इसका सिद्धाँत क्या है? प्रेम से बोलो हरे राम! ये जो पाँच ऋतु हैं शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध से पाँचों ही विषय शर्मन्दी लगती है. इन पाँचों में भी भगवान का बड़ा रंग है. इन पाँचों विषयों पर अनन्त जीव मस्त हैं. पर जब वैराग रूपी बसन्त आता है तो पाँचों विषय फीकी लगती है. उनका त्याग हो जायेगा.

प्रेम से बोलो हरे राम! ये भंवरा कौन है? आप सब भाई-माई भंवरे हो और यह सत्संग बसन्त है. इसके अन्दर आप नाम की, शिवोऽम् की, गुंज्झार करते हो. प्रेम से बोलो हरे राम! इसी महात्माओं के सत्संग रूपी बसन्त में ऐसा तो सुगन्ध है कि क्या कहें. जिसके स्पर्श करने से हाथ लगाने से स्नान करना पड़े ऐसी दुर्गन्धी वाला जीव, महात्माओं के संग में आया तो ऐसा सुगंधित हो गया, ऐसी खुशबू वाला हो गया कि चारों वर्ण उसके ऊपर चंवर झुला रहे हैं.

कहो रविदास कौन था. वाल्मीकि कौन था. रजब कौन था. सदना कौन था. बोलो हरे राम! अजामेल कौन था? ये महात्माओं के संग में सुगंधित और पूजन योग्य हो गये.

बसन्त ऋतु को सब जन गावत,
सुर नर मुनि जन के मन भावत।
मुझको लागत प्यारी रे,
ऋतु ऋतु में रंग साहब का, बसन्त ऋतु रंगवारी रे।।

प्रेम से बोलो हरे राम! बसन्त ऋतु को सारे ऋषि मुनि गाते हैं. बसन्त ऋतु सभी को प्यारी लगती है लेकिन वैराग संतों-महात्माओं को अच्छा लगता है लेकिन मिलेगा तो भाग से मिलेगा.

किस्मत किस्मत मत करो, किस्मत में कुछ नाहीं।
हिकमत में किस्मत बसे, कर देखा जग माहीं।।

जैसे व्यवहार करते हो, धंधा करते हो, पुरुषार्थ करते हो तो इसके लिए भी पुरुषार्थ करो. पुरुषार्थ प्रारब्ध-बोध है.

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश उदारता का गुण मन पर है, धन पर नहीं,
बड़प्पन का गुण बुद्धि पर है, आयु पर नहीं।

आप पुरुषार्थ करो. जितने भाई-माई बैठे हो. जैसे व्यवहार में पुरुषार्थ करते हो उसी प्रकार परमार्थ में भी करो पुरुषार्थ करो. ये भाग से मिलेंगे लेकिन भाग को खोलो. प्रेम से बोलो हरे राम! गुरु महाराज कहते हैं मेरे को तो बसन्त बहुत प्यारी लगती है.

बसन्त ऋतु है बहुत रसाली, कह टेऊँ भये संत सुखाली।
जाऊँ बलि बलिहारी .....
ऋतु ऋतु में है रंग साहब का, बसन्त ऋतु रंगवारी रे...

प्रेम से बोलो हरे राम! ये बसन्त की ऋतु है. रसाली है. रस का अमृत का आला है. ये वैराग को पाकर सत्संग का वैराग, आत्माराम का वैराग ये तीनों वैराग आगे बसन्त बहुत है. आगे आपको सुनायेंगे. मैं इस सत्संग वैराग पर बलिहारी जाऊँ. इसी समय कलियुग के अन्दर बहुत कठिन समय आया है. इसी के अन्दर दो ही साधन है. याद करना या लिखना. उदार चाहो, हे मेरे मन! ये दो साधन कर. सतयुग के अन्दर पुराणों में लिखा है, सतयुग के अन्दर तप का प्रभाव होता था. तप से परम पद की प्राप्ति होती थी. भगवान का दर्शन होता था. जैसे ध्रुव, प्रहलाद को हुआ भगवान का दर्शन. बोलो हरे राम! त्रेतायुग में यज्ञ, यज्ञ से भगवान प्रसन्न होता था. सत् पदार्थों की प्राप्ति होती थी. द्वापर में अर्चन-पूजा ठाकुर व मंदिरों की पूजा उसी से भगवान का दर्शन होता था. भगवान प्रकट होते थे. कलियुग में तीनों हैं पूजा-पाठ होते हैं, पर फल भावना से मिलता है पहले जितना था उतना नहीं. क्योंकि ये कठिन समय है. तीनों युग में सदाशिव घूमता था. अभी घूमता है लेकिन अर्न्तध्यान हो गया. तीनों युगों में नारद मुनि घूमता था. तीनों युगों में विष्णु घूमता था. अभी है नहीं, अर्न्तध्यान हो गये. प्रेम से बोलो हरे राम! इसी कलियुग में दो साधन हैं-

कलियुग में प्रधान है, सेवा पुनि सत्संग।
कह टेऊँ जिसके किये, होवे भव दुःख भंग।।

याद करना. कलियुग में प्रधान है सेवा, तो गरीबों या सारी दुनिया की सेवा करना. अगर सारे दुनिया की न कर सको तो अपने देश की सेवा करो. अगर देश की सेवा न कर सको तो प्रान्त की सेवा करना. हे मेरे मन! और प्रान्त

बसन्त ऋतु में चाय व खटाई का प्रयोग कम से कम करें.

की सेवा न कर सको तो किसी जिले की सेवा करना, अगर इतनी भी शरीर में शक्ति नहीं तो अपने शहर की सेवा करना. तन, मन, धन, वाणी चार प्रकार से सेवा करना. अगर शहर की सेवा भी नहीं कर सको तथा शरीर में ताकत नहीं हो तो अपने पड़ौसियों की सेवा करना. हमारे पड़ौस में कोई दुःखी है वह भूखा है उसका बच्चा नंगा घूमता है और भूखा है पहले उसके बच्चे को खिलायेंगे. फिर अपने बच्चे को खिलाओगे तो सबसे बड़ी भक्ति कलियुग में ये ही है. उससे सत्फल की प्राप्ति होगी, भगवान का दर्शन होगा.

आत्मा का ज्ञान होगा. याद करना. सेवा करो.

बसन्त ऋतु में जिज्ञासुओं को प्रातःकाल शीघ्र उठकर गुरुमंत्र का अभ्यास करना चाहिये जिससे परमात्मा में मन शीघ्रता से लगता है एवं सुख शान्ति की अनुभूति होती है.

दूसरा सत्संग सेवा से अन्तःकरण की शुद्धि होगी. सत्संग से भगवान का दर्शन होगा. सत्संग से आत्मा का ज्ञान होगा. मोक्ष की प्राप्ति होगी.

बिनु सत्संग विवेक न होई। राम कृपा बिन सुलभ न सोई।।

ये विवेक सत्संग के बिना प्राप्त नहीं होगा. सत्संग भगवान के बिना प्राप्त नहीं होगा. सारे भाई-माई ये भगवान की कृपा हुई है तभी सत्संग मिला है सत्संग के बिना विवेक नहीं होगा. ये संसा, भ्रम निकल जायेगा. ये ज्ञान से ही होगा. इसलिये यमराज कहता है. हे नचिकेता! प्रेम से बोलो हरे राम! इसलिये पूरन सत्गुरु महाराज की जरूरत है. सत्गुरु के बिना ये संसा नहीं जायेगा. ये कथा यहाँ रख देते हैं. ये भजन यहाँ रख देते हैं. ये जो चार वचन सुने हैं. ये अपने मन को सुनाना. अब पल्लव पाओ.

ॐ शान्ति! शान्ति!! शान्ति!!!

।। ॐ श्री सत्नाम साक्षिणे नमः ।।

बसंत पंचमी विशेष

माँ सरस्वती देवी वंदना

ॐ या देवी सर्वभूतेषु बुद्धि-रूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।

ॐ या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेत पद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभुतिभिर्देवैः सदा वन्दिता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष जाड्यापहा।।

ॐ शुक्लां ब्रह्मविचार सार परमाद्यां जगद्व्यापिनीं,
वीणा पुस्तक धारिणीम् भयदां जाड्यान्ध कारापहाम्।
हस्ते स्फटिक मालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्।
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्।।

ॐ नमो शारदा मात विद्या प्रदेनी,
करो मेध्य मेधा यथा कन्त्रिवेणी।
करो नष्ट मोहादि शांतिआदि दीजै,
हरो आपकारी हृदय धाम कीजै।।

ॐ सरस्वती महाभागे, विद्ये कमल लोचने।
विश्वरुपे विशालाक्षि, विद्या देहि नमोस्तुते।।

ॐ सरस्वती नमस्तुभ्यं, वरदे कामरूपिणि।
विद्यारम्भं करिष्यामि, सिद्धिर्भवतु में सदा।।

ॐ या देवी सर्वभूतेषु विद्या-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।

– 'साधक' श्री अमरापुर दरबार, जयपुर

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

जब हम अपना मन और बुद्धि दोनों ही गुरु को अर्पित करेंगे तब ही हमें गुरु का सच्चा आशीर्वाद मिलेगा।

सद्गुरु टेऊँराम रचित बसन्त महिमा भजन

।। राग बसंत भजन ।।

बिरह बसन्त मेरे घर आया,
हृदय में भयी होली रे ।।टेक।।

बाग चमन में पंकज फूले, कोयल मैना भँवरा झूले।
बोलत मीठी बोली रे ॥ 1 ॥
सर्व सखी मिल गावन लागी, हरी भजन में हो अनुरागी।
रंगी केसर चोली रे ॥ 2 ॥
शीतल सुगन्धी पवन चलत है, मृदंग भेरी बीन बजत है।
गावत गुनिजन टोली रे ॥ 3 ॥
कहे टेऊँ भया जय जयकारा, होया आनन्द मंगल अपारा।
दम दम जाऊँ घोली रे ॥ 4 ॥

(2)

बसंत की ऋतु है अति सुन्दर,
देख सभी हर्षाते हैं ।।टेक।।

बसन्त की ऋतु आवत जब हीं, प्रसन्न होकर पंछी तबहीं।
रिलमिल मौज मचाते हैं ॥ 1 ॥
बन बन में होती हरियाली, त्रिविधि वायू बहत रसाली।
फूल सभी खिल जाते हैं ॥ 2 ॥
भंवरे मन में बहु हर्षावि, गुलशन में जा गूँज लगावे।
सुगन्धि माहिं समाते हैं ॥ 3 ॥
सन्त हरी का नाम ध्याये, सत्संग का दीबान लगाये।
कहे टेऊँ गुण गाते हैं ॥ 4 ॥

(3)

बसन्त की ऋतु है सुखदाई,
भँवरों के मन भाई रे ॥ टेक ॥

भँवरा जावत गुल स्थाना, होवत फूलों पर मस्ताना।
तन की सुध बिसराई रे ॥ 1 ॥
बसन्त ऋतु की देख बहारी, चारों तरफ भई हुबकारी।
पाँचों ऋतु शर्माई रे ॥ 2 ॥
ऋतु बसंत अमृत को सींचे, फूले तन मन बाग बगीचे।
जहँ तहँ सुगंधी छाई रे ॥ 3 ॥
ऋतु बसंत की महिमा भारी, कहे टेऊँ मुझ लागत प्यारी।
तां पर मैं बलि जाई रे ॥ 4 ॥

(4)

साक्षी चेतन बसन्त ऋतु से,
फूले पिण्ड ब्रह्मण्डा रे ।।टेक।।

माया जीव ईश्वर फूले, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर फूले।
फूले रवि प्रचण्डा रे ॥ 1 ॥
फूले धरणी पवन अकाशा, फूले पानी अग्नि प्रकाशा।
फूल रहे नव खण्डा रे ॥ 2 ॥
फूले सूक्ष्म थूल पसारा, फूले जीव चराचार सारा।
फूले यम का डण्डा रे ॥ 3 ॥
चेतन ऋतु कर सब जग फूले, कहे टेऊँ लख अंग अंग फूले।
फूले ज्ञान अखण्डा रे ॥ 4 ॥

(5)

आई है आई है ऋतु बसंत की ।। टेक ।।

1. ऋतों में ऋतु सुहानी है, सुन्दर जिसकी कहानी है, बरसे गुलाल होवे सब लाल, करे निहाल मोद मन में ।।
2. सूखे तरुवर हरे होवें, पुराने पात को खोवें, भयी गुलजार भँवर हुशियार, करे गुंजार गुलशन में ।।
3. बसन्त को सन्त जन गावे, सर्व के चीत में भावे, होवे प्रसन्न सदा हरिजन, लगावे लगन भगवन में ।।
4. कहे टेऊँ बसन्त गावो, परम आनन्द को पाओ, रही निष्काम जपो हरि नाम, पाओ सुख धाम मनुष तन में ।।

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

संसार में दो प्रकार के मनुष्य होते हैं– सज्जन और दुर्जन। दोनो के स्वभाव न्यारे न्यारे होते हैं। सज्जन पुरुष सबसे गुण ग्रहण करते हैं, जबकि दुर्जन मनुष्य भले मनुष्यों से भी अवगुण ही उठाते हैं।

बसंत पंचमी विशेष

माँ सरस्वती देवी वन्दना

धुन - नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे

स्थाई- मात शारदे हंस वाहिनी, मुझ को यह वरदान दे ।
विद्या पाकर नम्र बनूं मैं, ऐसा बुद्धि में ज्ञान दे ।।
मात शारदे .....

1. वाणी में शीतलता भरदे और मधुर व्यवहार दे ।
सदा करूं सम्मान बड़ो का, ऐसा शुद्ध विचार दे ।
करूं निरंतर प्रगति मातु मैं, पर न तनिक अभिमान दे ।।
मात शारदे .....

2. श्वेत वस्त्र ज्यों मैया तेरे, मन भी मेरा श्वेत हो
निष्कलंक हो जीवन मेरा, कलिमल से न अश्वेत हो ।
छोडूं ना कब साथ न्याय का, ऐसा ज्ञान महान दे ।।
मात शारदे .....

3. जीवन में गर संकट आये, तो भी ना घबराऊं मैं ।
आलोकित हो पथ विवेक से, ज्यों ज्यों कदम बढ़ाऊ मैं ।
सत्पथ से मन कभी न भटके, मेधा में यह ध्यान दे ।।
मात शारदे .....

4. ऐसी दे सदबुद्धि कि मेरे, मन में प्रेम प्रकाश हो ।
राग द्वेष और वैर विरोध के, अंधकार का नाश हो ।
धर्म-अर्थ और काम-मोक्ष से, मनोहर पद निर्बान दे ।।
मात शारदे .....

बसंत महिमा भजन

सत्गुर साहिब घर में आया सन्तनु जी गडु टोली रे ।।

1. घर-घर में अजु छाई बहारी,
बसन्त जी ऋतु आई प्यारी ।
. आनन्दु मारे छोली रे ।।सतगुर ....

2. सत्गुर पंहिंजी कृपा धारे,
मुंहिंजे ऐबन डे न निहारे ।
गडी गोप्युनि सां गोली रे ।।सतगुर ....

3. ब्रह्मज्ञान जी करे गजकारी,
प्रेम प्यार जी हणी पिचकारी
रंगी विरिह रंग चोली रे ।।सतगुर ....

4. अतुरु अबीरु गुलालु उडाए,
गुलनि संदी बरसाति वसाए ।
खूब मल्हाई होली रे ।।सतगुर ....

5. वाह-वाह सत्गुर जी आ सूरत,
मुरली मनोहर जी जणु मूरत
दर्शन तां वञां घोली रे ।।सतगुर ....

-स्वामी मनोहरप्रकाश जी महाराज
श्री अमरापुर स्थान, एम. आई. रोड़, जयपुर

कवि पहिलाज रचित बसन्त महिमा भजन

राग बसंत

थलु : आयो बसंतु, बसंतु न आयो,
बिना बसंत बसंतु अजायो ।

1. बाग खिड़िया पर भाग न खिड़िया,
भंवर मिड़िया पर टंवर न टिड़िया,
मुंद मटी पर मनु न मटायो ।।

2. सुका वण भी सावा थियड़ा,
तुंहिंजा अञ्ज छो वहिम न वियड़ा,
संसनि जे तोखे सीअ सिकायो ।।

3. मुंद न ईंदइ मूर्ख मोटी,
ठाहे वठु तूं किस्मत खोटी,
संत बसंत थी घर में घुरायो ।।

4. मुंद डिसी फूलिया वण मोगा,
सुधिरिया कीन अंदर जा ओगा,
मनुष उहो जणु जायो न जायो ।।

5. जाणु पहिलाज जा पाणही जाणे,
मुंद जी वठी छडि मौज तूं माणे,
संगु करे वठु सुरहो सजायो ।।

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश ज्ञान, ध्यान, आत्म विचार, नियम, प्रेम, शील, संतोष, उत्तम बुद्धि इत्यादि कुछ भी गुरु की कृपा के बिना नहीं मिल सकता ।

माँ सरस्वती वंदना

सरस्वती माता विद्या का दान दो
अपने चरणों की भक्ति और ज्ञान दो।

1. लालसा के मोती हैं बिखरे पड़े,
सत्य के मार्ग चलूँ पहचान दो।
सरस्वती माता विद्या का दान दो।।

2. वीणा वादनी माँ ! तेरी है जय जयकार,
वंदना माता करूँ वरदान दो।
सरस्वती माता विद्या का दान दो।।

3. तू विद्या की देवी तुझको नमस्कार
मैं अज्ञानी तेरा बालक भान दो।
सरस्वती माता विद्या का दान दो।।

4. शक्ति दो जीवन में नहीं बनूँ मैं निराश,
माँ मुझे फूलों जैसी मुस्कान दो।
सरस्वती माता विद्या का दान दो।।

5. माँ ! तेरे दर्शन की आशा है मुझे,
अपने चरणों की मुझे तू ध्यान दो।
सरस्वती माता विद्या का दान दो।।

विनीत : डॉ. दयाल 'आशा' सिंधु नगर

ऋतुराज बसंत

ऋतुराज बसंत आया। मन में हर्ष समाया।।
बसंत ऋतु की बड़ी बड़ाई,
सबने इसकी महिमा गाई।
संतों को भी भाया– ऋतुराज बसंत आया।।
बसंत ऋतु की छटा निराली,
जहाँ सूखा वहाँ हुई हरियाली।
सबको सुख पहुँचाया– ऋतुराज बसंत आया।।
पंछी पेड़ों पै गीत सुनायें,
भूं भूं करते भँवरें गायें।
सबने आनन्द पाया– ऋतुराज बसंत आया।।
बाग़–बगीचे भई गुलज़ारी,
फूल रही कैसे फुलवारी।
देख देख हर्षाया– ऋतुराज बसंत आया।।
मालिक की देखो मेहरबानी,
बसंत ऋतु उसकी निशानी।
'दिलीप' ने बसंत गाया,– ऋतुराज बसंत आया।।

प्रेम प्रकाशी संत दिलीप, धुलिया

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी मुझे कुछ चाहिए ही नहीं, केवल इतनी बात से मुक्ति हो जायेगी।

श्री प्रेम प्रकाश आश्रम चैन्नई का वार्षिकोत्सव एवं श्री रामेश्वरम धाम में मेला धूमधाम से मनाया गया

चैन्नई 12 से 16 जनवरी 2026

आश्रम वार्षिकोत्सव मेला

श्री प्रेम प्रकाश आश्रम चैन्नई का वार्षिकोत्सव मेला १२ जनवरी से १६ जनवरी तक धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का सोमवार १२ जनवरी को प्रातःकाल पाठों के शुभारम्भ के साथ प्रारंभ हुआ। प्रतिदिन प्रातःकाल एवं सायंकाल सत्संग सभा का आयोजन हुआ। परम पूज्य गुरुवर के आगमन के साथ ही संत जीतूराम के साथ चैन्नई व विभिन्न नगरों से आये प्रेमियों के हृदय गुरु महाराज जी संत मण्डल के दर्शन पाकर आनन्दित हो रहे थे.

गुरुवार १५ जनवरी को हवन यज्ञ के उपरांत श्री प्रेमप्रकाशी ध्वजावंदन हुआ. इसके पश्चात् १२ बजे तक सत्संग मौजानन्द हुआ श्री धर्मप्रकाश कल्याण मंडपम में हुआ. इसके बाद आम भण्डारे में सैकड़ों प्रेमियों ने भोजन प्रसाद पाया. सायंकालीन सत्संग ५ से ७:३० बजे तक श्री धर्मप्रकाश कल्याण मंडपम में हुआ.

१६ जनवरी को प्रातःकालीन सत्संग सभा में रखे गये पंचदिवसीय पाठों का भोग पारायण हुआ. सत्संग के अंत में चैन्नई आश्रम वार्षिकोत्सव को सम्पन्नता देते हुए पूज्य गुरु महाराज जी द्वारा सर्वजीवहितार्थ पल्लव (झोली फैलाकर प्रार्थना करना) पाया गया.

चैन्नई मेले में पूज्य सद्गुरु महाराज जी की मण्डली में पूज्य संत हरिओमलाल जी, संत लक्ष्मण (अहमदाबाद), संत ढालूराम, संत कमल (जयपुर), भगत हरदास, भगत दीपक शामिल रहे.

श्रीरामेश्वरम् धाम 17 से 19 जन.

देश विदेश के ५७ से अधिक शहरों के १२०० से भी अधिक प्रेमी जब श्रीरामेश्वरम्धाम पहुंचे तो उनकी खुशी का तो कोई ठिकाना ही नहीं था। एक तो श्री रामेश्वरमधाम के दर्शन वह भी अपने गुरुदेव के सानिध्य में। रेल्वे स्टेशन पर पहुंचते ही पूज्य गुरुदेव भगवान संतों का स्वागत मेले की व्यवस्था में लगे प्रेमियों द्वारा किया गया. कारों व अन्य वाहनों के काफिले में पूज्य गुरु महाराज जी संत मण्डल अतिथियों को निवास स्थान पर लाया गया- जहाँ पर संतों अतिथियों के रहने का सुप्रबन्धन किया गया था।

बारह ज्योतिर्लिंगों में से प्रमुख ज्योतिर्लिंग श्रीरामेश्वरम् धाम, शास्त्रों के अनुसार वनवास काल में सीता हरण के पश्चात् लंका जाते समय मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के कर कमलों द्वारा स्थापित किया गया शिवलिंग है. औढरदानी के इस परम पावन धाम श्रीरामेश्वरम् में भारत की सांस्कृतिक विविधता में एकता के भी दर्शन हर समय होते रहते हैं.

१६ वर्ष पूर्व तीर्थयात्रियों के सुविधा के लिए अग्नितीर्थम् समुद्रतट पर स्वामी टेऊँराम घाट (इसी घाट के अन्तर्गत सद्गुरु स्वामी टेऊँराम, सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द, सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश, सद्गुरु स्वामी हरिदासराम नाम से बड़े विशालकाय द्वार (घाट) हैं)- की स्थापना गुरुदेव भगवान श्री प्रेम प्रकाश मण्डल द्वारा की गई थी. इस धाम पर आने वाले तीर्थयात्री इसी घाट पर समुद्र स्नान करके पुरोहितों के माध्यम से पूजा-अर्चना-अनुष्ठान आदि करते हैं.

सद्गुरु टेऊँराम भगवान के प्रेमप्रकाशी भक्तों का परम सौभाग्य! पूज्य गुरु महाराज जी संत मण्डल की पावन सानिध्यता में समुद्र-स्नान का अनिर्वचनीय आनन्द इसी पावन स्थल 'सद्गुरु स्वामी टेऊँराम घाट' पर धनभागी प्रेमियों ने लिया. वाह मेरे साईं टेऊँराम बाबा! धन धन बाबा टेऊँराम! श्रीरामेश्वरमधाम के वार्षिक मेले में आये सभी अतिथियों के मुख से यही स्वर निकल रहे थे समुद्र स्नान करते समय!

वहाँ की परम्परानुसार समुद्र स्नान करके गीले कपड़ों में ही श्री रामेश्वरम् मंदिर परिसर में २२ कुंडों के जल से स्नान किया जाता है और फिर वस्त्र बदलकर श्रीरामनाथ भगवान् के दर्शन किये जाते हैं- उसी परम्परा का अनुपालन पूज्य गुरु महाराज जी संतों एवं अतिथियों द्वारा किया जाकर भगवान श्रीरामेश्वर

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

परम शांति के बिना जीवन का वास्तविक सुख संभव नहीं
और वह शाश्वत् सत्य और नित्य प्राप्त तत्व से ही संभव है।

का दर्शन करके पूजन-अर्चन-अभिषेक किया गया.

सायंकाल ५ बजे एक भव्यतम शोभायात्रा तमिल के बड़े-बड़े ढोल नगाड़ों, बैंड बाजे के साथ पूज्यश्री संत मण्डल के सानिध्य में 'सद्गुरु स्वामी टेऊँराम घाट' तक निकाली गई. स्वामी टेऊँराम घाट पर पुरोहित समाज द्वारा गुरु महाराज जी संतों अतिथियों का पुष्पवर्षा करते हुए स्वागत अभिनन्दन किया गया. मार्ग के अनेक मंदिरों सहित श्रीरामेश्वरम् मंदिर के मुख्यद्वार के दर्शन करते हुए स्वामी टेऊँराम घाट की परिक्रमा कर पुनः स्वामी टेऊँराम घाट पर आकर शोभायात्रा सम्पन्न हुई. इसके पश्चात् इसी घाट पर बनाये गये आकर्षक पण्डाल में विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया गया था. सत्संग सभा के अंत में भगवान त्रिभुवनेश्वर शंकर भोलेनाथ, झूलेलाल भगवान व सद्गुरु स्वामी टेऊँराम भगवान की महाआरती हुई. सद्गुरु महाराज संतों विशिष्ट अतिथियों ने आरती उतारी. आरती पश्चात् महाराजश्री ने पल्लव पाकर यहाँ के आनन्ददायी रसमयी कार्यक्रम का समापन किया.

१८ जनवरी, को श्री प्रेम प्रकाश मंदिर में प्रातःकालीन नित्य नियम प्रार्थना के पश्चात् हवन-यज्ञ करके श्री प्रेमप्रकाशी ध्वजावन्दन किया गया, ध्वजवंदना गीत, आरती पश्चात् पल्लव पाया गया. इसके पश्चात् गुरु महाराज जी की सानिध्यता में आये हुए समस्त प्रेमप्रकाशी प्रेमियों को धुनषकोडी तीर्थ पर ले जाया गया- जिसमें बसों सहित कुछ कार व अन्य वाहन सम्मिलित थे. धनुषकोडि जहाँ पर भारतीय महासागर के गहरे और उथले पानी को बंगाल की खाड़ी के छिछला और शांत पानी से मिलते हुए- के सहज दर्शन होते हैं, यहाँ से श्रीलंका की स्थलीय दूरी मात्र १८ मील दूरी पर है- धनुषकोडी, रामेश्वरम् से १५ किलोमीटर का सुनसान मार्ग पार करके वहाँ पहुँचते हैं. इस स्थल पर भगवान श्रीरामचन्द्र जी के अनेक मंदिरों के भी दर्शन होते हैं. धनुषकोडी में पूज्य गुरुमहाराज द्वारा समुद्र देवता का पूजन भी किया गया । धनुषकोडी में भजन भोजन का आनन्द भी हुआ.

सायंकालीन सत्संग सभा में संगत अत्यंत उल्लसित होकर गुरु महाराज संतों के श्रीमुख से श्रीरामेश्वरम् धाम की महत्ता का गुणगान सुनने लगी. सत्संग अंत में आरती की गई. मेले का समापन पल्लव द्वारा हुआ. इसके पश्चात् दक्षिण भारतीय व्यंजन के रूप में भण्डारा वितरण हुआ,

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

सेवा करने से अन्त: करण शुद्ध होता है।
शुद्ध अन्त: करण में आत्मा का ज्ञान भी शीघ्र हो जाता है।

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश संसार मन में है, आत्मा में नहीं।

गणतन्त्र दिवस 26 जनवरी विशेष

भारत जननी

भारत जननी! तुझको मेरा कोटि कोटि प्रणाम।

तेरी गोद में जन्में हैं, श्याम सुंदर प्रभु राम।।

1. तेरी है प्राचीन सभ्यता, साक्षी है इतिहास इसी का, श्रेष्ठ गुणों से सम्पन्न हो, सत्य संस्कृति धाम। भारत जननी! तुझको मेरा कोटि कोटि प्रणाम।

2. ज्ञानी, ध्यानी, वीर विज्ञानी हैं माँ तेरी संतान, विश्व का मार्गदर्शन करती, देती शान्ति का पैगाम। भारत जननी! तुझको मेरा कोटि कोटि प्रणाम।

3. गंगा यमुना सरस्वती गोदावरी और कावेरी, पावन तेरी माटी माता! तू है सुखों का धाम। भारत जननी! तुझको मेरा कोटि कोटि प्रणाम।

4. धन धान्य से सम्पन्न सुनकर किया विदेशियों ने प्रहार, शान्ति से तू ने सहन किये, शत्रु हुए बदनाम। भारत जननी! तुझको मेरा कोटि कोटि प्रणाम।

5. वेदों की तू सृजन भूमि, ज्ञान का तू भंडार, विश्व–शान्ति के 'आशा' उपासक करें ऊँचा तेरा नाम। भारत जननी! तुझको मेरा कोटि कोटि प्रणाम।

(डॉ. दयाल 'आशा' सिंधु नगर)

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

दुःख और चिंता का कारण मूर्खता ही है,
जो सत्संग से ही मिटती है।

जानने योग्य- सनातन धर्म की महत्वपूर्ण जानकारी

१-अष्टाध्यायी	पाणिनी
२-रामायण	वाल्मीकि
३-महाभारत	वेदव्यास
४-अर्थशास्त्र	चाणक्य
५-महाभाष्य	पतंजलि
६-सत्सहसारिका सूत्र	नागार्जुन
७-बुद्धचरित	अश्वघोष
८-सौंदरानन्द	अश्वघोष
९-महाविभाषाशास्त्र	वसुमित्र
१०- स्वप्नवासवदत्ता	भास
११-कामसूत्र	वात्स्यायन
१२-कुमारसंभवम्	कालिदास
१३-अभिज्ञानशकुंतलम्	कालिदास
१४-विक्रमोउर्वशियां	कालिदास
१५-मेघदूत	कालिदास
१६-रघुवंशम्	कालिदास
१७-मालविकाग्निमित्रम्	कालिदास
१८-नाट्यशास्त्र	भरतमुनि
१९-देवीचंद्रगुप्तम	विशाखदत्त
२०-मृच्छकटिकम्	शूद्रक
२१-सूर्य सिद्धान्त	आर्यभट्ट
२२-वृहतसिंता	बरामिहिर
२३-पंचतंत्र।	विष्णु शर्मा
२४-कथासरित्सागर	सोमदेव
२५-अभिधम्मकोश	वसुबन्धु
२६-मुद्राराक्षस	विशाखदत्त
२७-रावणवध	भटिट
२८-किरातार्जुनीयम्	भारवि
२९-दशकुमारचरितम्	दंडी
३०-हर्षचरित	वाणभट्ट
३१-कादंबरी	वाणभट्ट
३२-वासवदत्ता	सुबंधु
३३-नागानंद	हर्षवधन
३४-रत्नावली	हर्षवर्धन
३५-प्रियदर्शिका	हर्षवर्धन
३६-मालतीमाधव	भवभूति
३७-पृथ्वीराज विजय	जयानक
३८-कर्पूरमंजरी	राजशेखर
३९-काव्यमीमांसा	राजशेखर
४०-नवसहसांक चरित	पदम्गुप्त
४१-शब्दानुशासन	राजभोज
४२-वृहतकथामंजरी	क्षेमेन्द्र
४३-नैषधचरितम	श्रीहर्ष
४४-विक्रमांकदेवचरित	बिल्हण
४५-कुमारपालचरित	हेमचन्द्र
४६-गीतगोविन्द	जयदेव
४७-पृथ्वीराजरासो	चंदरवरदाई
४८-राजतरंगिणी	कल्हण
४९-रासमाला	सोमेश्वर
५०-शिशुपाल वध	माघ
५१-गौडवाहो	वाकपति
५२-रामचरित	सन्धयाकरनंदी
५३-द्वयाश्रय काव्य	हेमचन्द्र

वेद-ज्ञानः-

प्र.१- वेद किसे कहते है ?
उत्तर- ईश्वरीय ज्ञान की पुस्तक को वेद कहते है।

प्र.२- वेद-ज्ञान किसने दिया ?
उत्तर- ईश्वर ने दिया।

प्र.३- ईश्वर ने वेद-ज्ञान कब दिया ?
उत्तर- ईश्वर ने सृष्टि के आरंभ में वेद-ज्ञान दिया।

प्र.४- ईश्वर ने वेद ज्ञान क्यों दिया ?
उत्तर- मनुष्य-मात्र के कल्याण के लिए।

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

जिस भी व्यक्ति-वस्तु से जीव को 'सत्य' का बोध हो जाये वह व्यक्ति या वस्तु जीव के लिए गुरु हो सकता है परन्तु सद्गुरु नहीं हो सकता।

प्र.५- वेद कितने है ?
उत्तर- चार । १-ऋग्वेद २-यजुर्वेद ३-सामवेद ४-अथर्ववेद

प्र.६- वेदों के ब्राह्मण ।
उत्तर- वेद ब्राह्मण
१ - ऋग्वेद - ऐतरेय
२ - यजुर्वेद - शतपथ
३ - सामवेद - तांड्य
४ - अथर्ववेद - गोपथ

प्र.७- वेदों के उपवेद कितने है।
उत्तर - चार। वेद उपवेद
१- ऋग्वेद - आयुर्वेद
२- यजुर्वेद - धनुर्वेद
३ -सामवेद - गंधर्ववेद
४- अथर्ववेद - अर्थवेद

प्र ८- वेदों के अंग हैं ।
उत्तर - छः ।
१ - शिक्षा ४ - व्याकरण
२ - कल्प ५ - छंद
३ - निरूक्त ६ - ज्योतिष

प्र.९- वेदों का ज्ञान ईश्वर ने किन किन ऋषियो को दिया ?
उत्तर- चार ऋषियों को।
वेद ऋषि
१- ऋग्वेद - अग्नि
२- यजुर्वेद - वायु
३- सामवेद - आदित्य
४- अथर्ववेद - अंगिरा

प्र.१०-वेदों का ज्ञान ईश्वर ने ऋषियों को कैसे दिया?
उत्तर- समाधि की अवस्था में।

प्र.११- वेदों में कैसे ज्ञान है ?
उत्तर- सब सत्य विद्याओं का ज्ञान-विज्ञान।

प्र.१२- वेदो के विषय कौन-कौन से हैं ?
उत्तर- चार । ऋषि विषय
१- ऋग्वेद - ज्ञान
२- यजुर्वेद - कर्म
३- सामवेद - उपासना
४- अथर्ववेद - विज्ञान

प्र.१३- वेदों में।
ऋग्वेद में।
१- मंडल - १०
२ - अष्टक - ०८
३ - सूक्त - १०२८
४ - अनुवाक - ८५
५ - ऋचाएं - १०५८६
यजुर्वेद में।
१- अध्याय - ४०
२- मंत्र - १९७५
सामवेद में।
१- आरचिक - ०६
२- अध्याय - ०६
३- ऋचाएं - १८७५
अथर्ववेद में।
१- कांड - २०
२- सूक्त - ७३१
३- मंत्र - ५९७७

प्र.१४- वेद पढ़ने का अधिकार किसको है ?
उत्तर- मनुष्य-मात्र को वेद पढ़ने का अधिकार है।

प्र.१५- क्या वेदों में मूर्तिपूजा का विधान है ?
उत्तर- बिलकुल है।

प्र.१६- क्या वेदों में अवतारवाद का प्रमाण है ?
उत्तर- नहीं।

प्र.१७- सबसे बड़ा वेद कौन-सा है ?
उत्तर- ऋग्वेद।

प्र.१८- वेदों की उत्पत्ति कब हुई ?
उत्तर- वेदो की उत्पत्ति सृष्टि के आदि से परमात्मा द्वारा हुई । अर्थात् १ अरब ९६ करोड़ ८ लाख ४३ हजार वर्ष पूर्व ।

प्र.१९- वेद-ज्ञान के सहायक दर्शन-शास्त्र (उपअंग) कितने हैं और उनके लेखकों का क्या नाम है ?
उत्तर- १- न्याय दर्शन - गौतम मुनि।
२- वैशेषिक दर्शन - कणाद मुनि।
३- योगदर्शन - पतंजलि मुनि।
४- मीमांसा दर्शन - जैमिनी मुनि।
५- सांख्य दर्शन - कपिल मुनि।
६- वेदांत दर्शन - व्यास मुनि।

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश जब तक मन में भ्रम है तब तक यह मनुष्य दुःखी होता रहता है। जब ज्ञान प्राप्त होने के कारण उसका भ्रम नष्ट हो जाता है तब यह जीव सुखी होता है ।

प्र.२०- शास्त्रों के विषय क्या है ?
उत्तर- आत्मा, परमात्मा, प्रकृति, जगत की उत्पत्ति, मुक्ति अर्थात सब प्रकार का भौतिक व आध्यात्मिक ज्ञान-विज्ञान आदि।

प्र.२१- प्रामाणिक उपनिषदे कितनी है ?
उत्तर- केवल ग्यारह।

प्र.२२- उपनिषदों के नाम बतावे ?
उत्तर- ०१-ईश (ईशावास्य)
०२-केन
०३-कठ
०४-प्रश्न
०५-मुंडक
०६-मांडू
०७-ऐतरेय
०८-तैत्तिरीय
०९-छांदोग्य
१०-वृहदारण्यक
११-श्वेताश्वतर ।

प्र.२३- उपनिषदों के विषय कहाँ से लिए गए है ?
उत्तर- वेदों से।

प्र.२४- चार वर्ण।
उत्तर- १- ब्राह्मण २- क्षत्रिय ३- वैश्य ४- शूद्र

प्र.२५- चार युग।
१- सतयुग - १७,२८००० वर्षों का नाम (सतयुग) रखा है।
२- त्रेतायुग- १२,९६००० वर्षों का नाम(त्रेतायुग) रखा है।
३- द्वापरयुग- ८,६४००० वर्षों का नाम है।
४- कलयुग- ४,३२००० वर्षों का नाम है।
कलयुग के ५१२२ वर्षों का भोग हो चुका है अभी तक।
४,२७०२४ वर्षों का भोग होना है।

पंच महायज्ञ १- ब्रह्मयज्ञ २- देवयज्ञ ३- पितृयज्ञ ४- बलिवैश्वदेवयज्ञ ५- अतिथियज्ञ

स्वर्ग - जहाँ सुख है। नरक - जहाँ दुःख है।.

संकलित

भारत के प्रसिद्ध कैलेण्डरों–पंचांगों में

'सांई टेऊँराम जयंती' 'सांई टेऊँराम पुण्यतिथि प्रकाशित

राजस्थान पत्रिका एवं दैनिक नवज्योति न्यूज पेपर के वर्ष 2026 के कैलेंडर में भी 19 जुलाई सद्गुरु टेऊँराम जयंती, 20 जून सांई टेऊँराम पुण्य तिथि, एवं 9 जून से 19 जुलाई सद्गुरु टेऊँराम चालीहा महोत्सव प्रकाशित !!!

श्री प्रेम प्रकाश पंथ के आधार स्तम्भ, संस्थापक प्रवर्तक आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज एक अवधूत योगी तपस्वी, तत्त्वज्ञ, सिद्ध महापुरुष हुए हैं. जिनके द्वारा जिज्ञासुओं के आध्यात्मिक पथ आलोक के लिये अमोलक सद्ग्रंथ "श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ" की रचना संसार में आने वाले युग-युगान्तर तक ज्ञान ज्योति प्रकाशित करती रहेगी. ऐसे ज्ञानविभूति योगीराज सत्पुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की पुण्यतिथि २० जून २०२६, शनिवार एवं सांई टेऊँराम जयंती १९ जुलाई २०२६, रविवार को विश्व विख्यात कैलेण्डरों-पँचागों में इस वर्ष भी स्थान दिया गया है. अनेक कैलेण्डरों-पँचांगों में सांई टेऊँराम बाबा का चित्र भी उपरोक्त तारीखों में छापा गया है. ऐसे सिद्ध संत महापुरूष की जयंती विश्व के जाने माने कैलेंडरो पंचांगों में प्रकाशित होने पर संत समाज अभीभूत है ! इस पुनीत कार्य के लिये श्री प्रेम प्रकाश संत मण्डल ने प्रकाशक बंधुओं, ज्योतिषाचार्यों को साधुवाद देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है.

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश ज्ञान, ध्यान, आत्म विचार, नियम, प्रेम, शील, संतोष, उत्तम बुद्धि इत्यादि कुछ भी गुरु की कृपा के बिना नहीं मिल सकता।

भगवान शिव के "35" रहस्य

भगवान शिव अर्थात पार्वती के पति शंकर जिन्हें महादेव, भोलेनाथ, आदिनाथ आदि कहा जाता है।

१. आदिनाथ शिव :- सर्वप्रथम शिव ने ही धरती पर जीवन के प्रचार-प्रसार का प्रयास किया इसलिए उन्हें 'आदिदेव' भी कहा जाता है। 'आदिश का अर्थ प्रारंभ। आदिनाथ होने के कारण उनका एक नाम 'आदिश' भी है।

२. शिव के अस्त्र-शस्त्र :- शिव का धनुष पिनाक, चक्र भवरेंदु और सुदर्शन, अस्त्र पाशुपतास्त्र और शस्त्र त्रिशूल है। उक्त सभी का उन्होंने ही निर्माण किया था।

३. भगवान शिव का नाग :- शिव के गले में जो नाग लिपटा रहता है उसका नाम वासुकि है। वासुकि के बड़े भाई का नाम शेषनाग है।

४. शिव की अर्द्धांगिनी :- शिव की पहली पत्नी सती ने ही अगले जन्म में पार्वती के रूप में जन्म लिया और वही उमा, उर्मि, काली कही गई हैं।

५. शिव के पुत्र :- शिव के प्रमुख ६ पुत्र हैं- गणेश, कार्तिकेय, सुकेश, जलंधर, अयप्पा और भूमा। सभी के जन्म की कथा रोचक है।

६. शिव के शिष्य :- शिव के ७ शिष्य हैं जिन्हें प्रारंभिक सप्तऋषि माना गया है। इन ऋषियों ने ही शिव के ज्ञान को संपूर्ण धरती पर प्रचारित किया जिसके चलते भिन्न-भिन्न धर्म और संस्कृतियों की उत्पत्ति हुई। शिव ने ही गुरु और शिष्य परंपरा की शुरुआत की थी। शिव के शिष्य हैं- बृहस्पति, विशालाक्ष, शुक्र, सहस्राक्ष, महेन्द्र, प्राचेतस मनु, भरद्वाज इसके अलावा ८वें गौरशिरस मुनि भी थे।

७. शिव के गण :- शिव के गणों में भैरव, वीरभद्र, मणिभद्र, चंदिस, नंदी, श्रृंगी, भृगिरिटी, शैल, गोकर्ण, घंटाकर्ण, जय और विजय प्रमुख हैं। इसके अलावा, पिशाच, दैत्य और नाग-नागिन, पशुओं को भी शिव का गण माना जाता है।

८. शिव पंचायत :- भगवान सूर्य, गणपति, देवी, रुद्र और विष्णु ये शिव पंचायत कहलाते हैं।

९. शिव के द्वारपाल :- नंदी, स्कंद, रिटी, वृषभ, भृंगी, गणेश, उमा-महेश्वर और महाकाल।

१०. शिव पार्षद :- जिस तरह जय और विजय विष्णु के पार्षद हैं उसी तरह बाण, रावण, चंड, नंदी, भृंगी आदि शिव के पार्षद हैं।

११. सभी धर्मों का केंद्र शिव :- शिव की वेशभूषा ऐसी है कि प्रत्येक धर्म के लोग उनमें अपने प्रतीक ढूंढ सकते हैं। मुशरिक, यजीदी, साबिईन, सुबी, इब्राहीमी धर्मों में शिव के होने की छाप स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। शिव के शिष्यों से एक ऐसी परंपरा की शुरुआत हुई, जो आगे चलकर शैव, सिद्ध, नाथ, दिगंबर और सूफी संप्रदाय में विभक्त हो गई।

१२. बौद्ध साहित्य के मर्मज्ञ अंतरराष्ट्रीय :- ख्यातिप्राप्त विद्वान प्रोफेसर उपासक का मानना है कि शंकर ने ही बुद्ध के रूप में जन्म लिया था। उन्होंने पालि ग्रंथों में वर्णित २७ बुद्धों का उल्लेख करते हुए बताया कि इनमें बुद्ध के ३ नाम अतिप्राचीन हैं- तणंकर, शणंकर और मेघंकर।

१३. देवता और असुर दोनों के प्रिय शिव :- भगवान शिव को देवों के साथ असुर, दानव, राक्षस, पिशाच, गंधर्व, यक्ष आदि सभी पूजते हैं। वे रावण को भी वरदान देते हैं और राम को भी। उन्होंने भस्मासुर, शुक्राचार्य आदि कई असुरों को वरदान दिया था। शिव, सभी आदिवासी, वनवासी जाति, वर्ण, धर्म और समाज के सर्वोच्च देवता हैं।

१४. शिव चिह्न :- वनवासी से लेकर सभी साधारण व्यक्ति जिस चिह्न की पूजा कर सकें, उस पत्थर के ढेले, बटिया को शिव का चिह्न माना जाता है। इसके अलावा रुद्राक्ष और त्रिशूल को भी शिव का चिह्न माना गया है। कुछ लोग डमरू और अर्द्धचन्द्र को भी शिव का चिह्न मानते हैं, हालांकि ज्यादातर लोग शिवलिंग अर्थात शिव की ज्योति का पूजन करते हैं।

१५. शिव की गुफा :- शिव ने भस्मासुर से बचने के लिए एक पहाड़ी में अपने त्रिशूल से एक गुफा बनाई और वे फिर उसी गुफा में छिप गए। वह गुफा जम्मू से १५० किलोमीटर दूर त्रिकूटा की पहाड़ियों पर है। दूसरी ओर भगवान शिव ने जहां पार्वती को अमृत ज्ञान दिया था वह गुफा 'अमरनाथ गुफा' के नाम से प्रसिद्ध है।

१६. शिव के पैरों के निशान :- श्रीपद- श्रीलंका में रतन द्वीप पहाड़ की चोटी पर स्थित श्रीपद नामक मंदिर में शिव के पैरों के निशान हैं। ये पदचिह्न ५ फुट ७ इंच लंबे और २ फुट ६ इंच चौड़े हैं। इस स्थान को सिवानोलीपदम कहते हैं। कुछ लोग इसे आदम पीक कहते हैं।

रुद्र पद- तमिलनाडु के नागपट्टीनम जिले के थिरुवेंगडू क्षेत्र में श्रीस्वेदारण्येश्वर का मंदिर में शिव के पदचिह्न हैं जिसे 'रुद्र पदम' कहा जाता है। इसके अलावा थिरुवन्नामलाई में भी एक स्थान पर शिव के पदचिह्न हैं।

तेजपुर- असम के तेजपुर में ब्रह्मपुत्र नदी के पास स्थित रुद्रपद मंदिर में शिव के दाएं पैर का निशान है।

जागेश्वर- उत्तराखंड के अल्मोड़ा से ३६ किलोमीटर दूर जागेश्वर मंदिर की पहाड़ी से लगभग साढ़े ४ किलोमीटर दूर जंगल में भीम के पास शिव के पदचिह्न हैं। पांडवों को दर्शन देने से बचने के लिए उन्होंने अपना एक पैर यहां और दूसरा कैलाश में रखा था।

रांची- झारखंड के रांची रेलवे स्टेशन से ७ किलोमीटर की दूरी पर 'रांची हिल' पर शिवजी के पैरों के निशान हैं। इस स्थान को 'पहाड़ी बाबा मंदिर' कहा जाता है।

१७. शिव के अवतार :- वीरभद्र, पिप्पलाद, नंदी, भैरव, महेश, अश्वत्थामा, शरभावतार, गृहपति, दुर्वासा, हनुमान, वृषभ, यतिनाथ, कृष्णदर्शन, अवधूत, भिक्षुवर्य, सुरेश्वर, किरात, सुनटनर्तक, ब्रह्मचारी, यक्ष, वैश्यानाथ, द्विजेश्वर, हंसरूप, द्विज, नतेश्वर आदि हुए हैं। वेदों में रुद्रों का जिक्र है। रुद्र ११ बताए जाते हैं- कपाली, पिंगल, भीम, विरुपाक्ष, विलोहित, शास्ता, अजपाद, आपिर्बुध्य, शंभू, चण्ड तथा भव।

१८. शिव का विरोधाभासिक परिवार :-शिवपुत्र कार्तिकेय का वाहन मयूर है, जबकि शिव के गले में वासुकि नाग है। स्वभाव से मयूर और नाग आपस में दुश्मन हैं। इधर गणपति का वाहन चूहा है, जबकि सांप मूषकभक्षी जीव है। पार्वती का वाहन शेर है, लेकिन शिवजी का वाहन तो नंदी बैल है। इस विरोधाभास या वैचारिक भिन्नता के बावजूद परिवार में एकता है।

१९. तिब्बत स्थित कैलाश पर्वत पर उनका निवास है। जहां पर शिव विराजमान हैं उस पर्वत के ठीक नीचे पाताल लोक है जो भगवान विष्णु का स्थान है। शिव के आसन के ऊपर वायुमंडल के पार क्रमशः स्वर्ग लोक और फिर ब्रह्माजी का स्थान है।

२०.शिव भक्त :- ब्रह्मा, विष्णु और सभी देवी-देवताओं सहित भगवान राम और कृष्ण भी शिव भक्त है। हरिवंश पुराण के अनुसार, कैलास पर्वत पर कृष्ण ने शिव को प्रसन्न करने के लिए तपस्या की थी। भगवान राम ने रामेश्वरम में शिवलिंग स्थापित कर उनकी पूजा-अर्चना की थी।

२१.शिव ध्यान :- शिव की भक्ति हेतु शिव का ध्यान-पूजन किया जाता है। शिवलिंग को बिल्वपत्र चढ़ाकर शिवलिंग के समीप मंत्र जाप या ध्यान करने से मोक्ष का मार्ग पुष्ट होता है।

२२.शिव मंत्र :- दो ही शिव के मंत्र हैं पहला- ऊँ नमः शिवाय। दूसरा महामृत्युंजय मंत्र- ऊँ ह्रौं जू सः। ऊँ भूः भुवः स्वः। ऊँ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। स्वः भुवः भूः ऊँ । सः जू ह्रौं ऊँ ।। है।

२३.शिव व्रत और त्योहार :- सोमवार, प्रदोष और श्रावण मास में शिव व्रत रखे जाते हैं। शिवरात्रि और महाशिवरात्रि शिव का प्रमुख पर्व त्योहार है।

२४. शिव प्रचारक :- भगवान शंकर की परंपरा को उनके शिष्यों बृहस्पति, विशालाक्ष (शिव), शुक्र, सहस्राक्ष, महेन्द्र, प्राचेतस मनु, भरद्वाज, अगस्त्य मुनि, गौरशिरस मुनि, नंदी, कार्तिकेय, भैरवनाथ आदि ने आगे बढ़ाया। इसके अलावा वीरभद्र, मणिभद्र, चंदिस, नंदी, श्रृंगी, भृगिरिटी, शैल, गोकर्ण, घंटाकर्ण, बाण, रावण, जय और विजय ने भी शैवपंथ का प्रचार किया। इस परंपरा में सबसे बड़ा नाम आदिगुरु भगवान दत्तात्रेय का आता है। दत्तात्रेय के बाद आदि शंकराचार्य, मत्स्येन्द्रनाथ और गुरु गुरुगोरखनाथ का नाम प्रमुखता से लिया जाता है।

२५. शिव महिमा :- शिव ने कालकूट नामक विष पिया था जो अमृत मंथन के दौरान निकला था। शिव ने भस्मासुर जैसे कई असुरों को वरदान दिया था। शिव ने कामदेव को भस्म कर दिया था। शिव ने गणेश और राजा दक्ष के सिर को जोड़ दिया था। ब्रह्मा द्वारा छल किए जाने पर शिव ने ब्रह्मा का पांचवां सिर काट दिया था।

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

आचार्य द्वारा चलाई गई प्रथा ही परम्परा कहलाती है वह शास्त्रों के आधार पर होती है। जो कोई शिष्य अपने आचार्य की परम्परा को ज्यों का त्यों बनाये रखता है उसको ही गुरुभक्त कहते हैं।

२६. शैव परम्परा :- दसनामी, शाक्त, सिद्ध, दिगंबर, नाथ, लिंगायत, तमिल शैव, कालमुख शैव, कश्मीरी शैव, वीरशैव, नाग, लकुलीश, पाशुपत, कापालिक, कालदमन और महेश्वर सभी शैव परंपरा से हैं। चंद्रवंशी, सूर्यवंशी, अग्निवंशी और नागवंशी भी शिव की परंपरा से ही माने जाते हैं। भारत की असुर, रक्ष और आदिवासी जाति के आराध्य देव शिव ही हैं। शैव धर्म भारत के आदिवासियों का धर्म है।

२७.शिव के प्रमुख नाम :- शिव के वैसे तो अनेक नाम हैं जिनमें १०८ नामों का उल्लेख पुराणों में मिलता है लेकिन यहां प्रचलित नाम जानें-महेश, नीलकंठ, महादेव, महाकाल, शंकर, पशुपतिनाथ, गंगाधर, नटराज, त्रिनेत्र, भोलेनाथ, आदिदेव, आदिनाथ, त्रियंबक, त्रिलोकेश, जटाशंकर, जगदीश, प्रलयंकर, विश्वनाथ, विश्वेश्वर, हर, शिवशंभु, भूतनाथ और रुद्र।

२८.अमरनाथ के अमृत वचन :- शिव ने अपनी अर्धांगिनी पार्वती को मोक्ष हेतु अमरनाथ की गुफा में जो ज्ञान दिया उस ज्ञान की आज अनेकानेक शाखाएं हो चली हैं। वह ज्ञानयोग और तंत्र के मूल सूत्रों में शामिल है। 'विज्ञान भैरव तंत्र' एक ऐसा ग्रंथ है, जिसमें भगवान शिव द्वारा पार्वती को बताए गए ११२ ध्यान सूत्रों का संकलन है।

२९.शिव ग्रंथ :- वेद और उपनिषद सहित विज्ञान भैरव तंत्र, शिव पुराण और शिव संहिता में शिव की संपूर्ण शिक्षा और दीक्षा समाई हुई है। तंत्र के अनेक ग्रंथों में उनकी शिक्षा का विस्तार हुआ है।

३०.शिवलिंग :- वायु पुराण के अनुसार प्रलयकाल में समस्त सृष्टि जिसमें लीन हो जाती है और पुनः सृष्टिकाल में जिससे प्रकट होती है, उसे लिंग कहते हैं। इस प्रकार विश्व की संपूर्ण ऊर्जा ही लिंग की प्रतीक है। वस्तुतः यह संपूर्ण सृष्टि बिंदु-नाद स्वरूप है। बिंदु शक्ति है और नाद शिव। बिंदु अर्थात ऊर्जा और नाद अर्थात ध्वनि। यही दो संपूर्ण ब्रह्मांड का आधार है। इसी कारण प्रतीक स्वरूप शिवलिंग की पूजा-अर्चना है।

३१.बारह ज्योतिर्लिंगः- सोमनाथ, मल्लिकार्जुन, महाकालेश्वर, ऊँकारेश्वर, वैद्यनाथ, भीमाशंकर, रामेश्वर, नागेश्वर, विश्वनाथजी, त्र्यम्बकेश्वर, केदारनाथ, घृष्णेश्वर। ज्योतिर्लिंग उत्पत्ति के संबंध में अनेकों मान्यताएं प्रचलित है। ज्योतिर्लिंग यानी 'व्यापक ब्रह्मात्मलिंग' जिसका अर्थ है'व्यापक प्रकाश'। जो शिवलिंग के बारह खंड हैं। शिवपुराण के अनुसार ब्रह्म, माया, जीव, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी को ज्योतिर्लिंग या ज्योति पिंड कहा गया है।

दूसरी मान्यता अनुसार शिव पुराण के अनुसार प्राचीनकाल में आकाश से ज्योति पिंड पृथ्वी पर गिरे और उनसे थोड़ी देर के लिए प्रकाश फैल गया। इस तरह के अनेकों उल्का पिंड आकाश से धरती पर गिरे थे। भारत में गिरे अनेकों पिंडों में से प्रमुख बारह पिंड को ही ज्योतिर्लिंग में शामिल किया गया।

३२.शिव का दर्शन :- शिव के जीवन और दर्शन को जो लोग यथार्थ दृष्टि से देखते हैं वे सही बुद्धि वाले और यथार्थ को पकड़ने वाले शिवभक्त हैं, क्योंकि शिव का दर्शन कहता है कि यथार्थ में जियो, वर्तमान में जियो, अपनी चित्तवृत्तियों से लड़ो मत, उन्हें अजनबी बनकर देखो और कल्पना का भी यथार्थ के लिए उपयोग करो। आइंस्टीन से पूर्व शिव ने ही कहा था कि कल्पना ज्ञान से ज्यादा महत्वपूर्ण है।

३३.शिव और शंकर :- शिव का नाम शंकर के साथ जोड़ा जाता है। लोग कहते हैं- शिव, शंकर, भोलेनाथ। इस तरह अनजाने ही कई लोग शिव और शंकर को एक ही सत्ता के दो नाम बताते हैं। असल में, दोनों की प्रतिमाएं अलग-अलग आकृति की हैं। शंकर को हमेशा तपस्वी रूप में दिखाया जाता है। कई जगह तो शंकर को शिवलिंग का ध्यान करते हुए दिखाया गया है। अतः शिव और शंकर दो अलग अलग सत्ताएं है। हालांकि शंकर को भी शिवरूप माना गया है। माना जाता है कि महेष (नंदी) और महाकाल भगवान शंकर के द्वारपाल हैं। रुद्र देवता शंकर की पंचायत के सदस्य हैं।

३४. देवों के देव महादेव : देवताओं की दैत्यों से प्रतिस्पर्धा चलती रहती थी। ऐसे में जब भी देवताओं पर घोर संकट आता था तो वे सभी देवाधिदेव महादेव के पास जाते थे। दैत्यों, राक्षसों सहित देवताओं ने भी शिव को कई बार चुनौती दी, लेकिन वे सभी परास्त होकर शिव के समक्ष झुक गए इसीलिए शिव हैं देवों के देव महादेव। वे दैत्यों, दानवों और भूतों के भी प्रिय भगवान हैं। वे राम को भी वरदान देते हैं और रावण को भी।

३५. शिव हर काल में :- भगवान शिव ने हर काल में लोगों को दर्शन दिए हैं। राम के समय भी शिव थे। महाभारत काल में भी शिव थे और विक्रमादित्य के काल में भी शिव के दर्शन होने का उल्लेख मिलता है। भविष्य पुराण अनुसार राजा हर्षवर्धन को भी भगवान शिव ने दर्शन दिए थे।

संकलित

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश आपके घर द्वार के भीतर जो भी प्राणी आ जाये, उसे परमात्मा की मूर्ति जानकर, उसकी सेवा करनी चाहिए।

रात 12 बजे मनाते हैं जन्मदिन तो हो जाएं सावधान.....

एक अजीब सी प्रथा इन दिनों चल पड़ी है वो है .. रात १२ बजे शुभकामनाएं देने और जन्मदिन मनाने की। लेकिन क्या आपको पता है भारतीय शास्त्र इसे गलत मानता है .. आज हम आपको यही बताने जा रहे हैं कि वास्तव में ऐसा करने से कितना बड़ा अनिष्ट हो सकता है..

आजकल किसी का बर्थडे हो, शादी की सालगिरह हो या फिर कोई और अवसर क्यों ना हो, रात के बारह बजे केक काटना लेटेस्ट फैशन बन गया है। लोग इस बात को लेकर उत्साहित रहते हैं कि रात को बारह बजे केक काटना है

अक्सर ऐसा देखा जाता है कि लोग अपना जन्मदिन १२ बजे यानि निशीथ काल (प्रेत काल) में मनाते हैं। । निशीथ काल रात्रि को वह समय है जो सामान्यतः रात १२ बजे से रात ३ बजे के बीच होता है। आमजन इसे मध्यरात्रि या अर्ध रात्रि काल कहते हैं। शास्त्रनुसार यह समय अदृश्य शक्तियों, भूत व पिशाच का काल होता है। इस समय में यह शक्ति अत्यधिक रूप से प्रबल हो जाती हैं।

हम जहां रहते हैं वहां कई ऐसी शक्तियां होती हैं, जो हमें दिखाई नहीं देतीं, किंतु बहुधा हम पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं जिससे हमारा जीवन अस्त-व्यस्त हो उठता है और हम दिशाहीन हो जाते हैं। जन्मदिन की पार्टी में अक्सर ऐसा होता है। ऐसे प्रेतकाल में केक काटकर, मदिरा व मांस का सेवन करने से अदृश्य शक्तियां व्यक्ति की आयु व भाग्य में कमी करती हैं और दुर्भाग्य उसके द्वार पर दस्तक देता है। साल के कुछ दिनों को छोड़कर जैसे दीपावली, ४ नवरात्रि, जन्माष्टमी व शिवरात्रि पर निशीथ काल महानिशीथ काल बन कर शुभ प्रभाव देता है जबकि अन्य समय में दूषित प्रभाव देता है।

शास्त्रों के अनुसार रात के समय दी गई शुभकामनाऐं प्रतिकूल फल देती हैं। और सनातन धर्म के शास्त्र अनुसार अग्नि को बुझा कर उत्सव मनाना अंधेरे के देवता असुर का आवाहण करने के बराबर माना गया है।

हिन्दू शास्त्रों के अनुसार दिन की शुरुआत सूर्योदय के साथ ही होती है और यही समय ऋषि-मुनियों के तप का भी होता है। इसलिए इस काल में वातावरण शुद्ध और नकारात्मकता विहीन होता है। ऐसे में शास्त्रों के अनुसार सूर्योदय होने के बाद ही व्यक्ति को जन्म दिन की शुभकामनाएं देना चाहिए क्योंकि रात के समय वातावरण में रज और तम कणों की मात्रा अत्यधिक होती है और उस समय दी गई बधाई या शुभकामनाएं फलदायी ना होकर अनिष्टकारी बन जाती हैं।

संकलित

दो अनमोल हीरे ''ईमानदारी और खुद्दारी''

एक सौदागर को बाज़ार में घूमते हुए एक उम्दा नस्ल का ऊंट दिखाई पड़ा! सौदागर और ऊंट बेचने वाले के बीच काफी लंबी सौदेबाजी हुई और आखिर में सौदागर ऊंट खरीद कर घर ले आया! घर पहुंचने पर सौदागर ने अपने नौकर को ऊंट का कजावा (काठी) निकालने के लिए बुलाया..! कजावे के नीचे नौकर को एक छोटी सी मखमल की थैली मिली जिसे खोलने पर उसे कीमती हीरे जवाहरात भरे होने का पता चला..!

नौकर चिल्लाया, ''मालिक आपने ऊंट खरीदा, लेकिन देखो, इसके साथ क्या मुफ्त में आया है!'' सौदागर भी हैरान था, उसने अपने नौकर के हाथों में हीरे देखे जो कि चमचमा रहे थे और सूरज की रोशनी में और भी टिम टिमा रहे थे!

सौदागर बोला ''मैंने ऊंट ख़रीदा है, न कि हीरे, मुझे उसे फौरन वापस करना चाहिए! नौकर मन में सोच रहा था कि मेरा मालिक कितना बेवकूफ है...!

बोला ''मालिक किसी को पता नहीं चलेगा!'' पर, सौदागर ने एक न सुनी और वह फौरन बाज़ार पहुंचा और दुकानदार को मख़मली थैली वापिस दे दी! '

ऊंट बेचने वाला बहुत खुश था, बोला, ''मैं भूल ही गया था कि अपने कीमती पत्थर मैंने कजावे के नीचे छुपा के

रख दिए थे!

अब आप इनाम के तौर पर कोई भी एक हीरा चुन लीजिए! सौदागर बोला,'' मैंने ऊंट के लिए सही कीमत चुकाई है इसलिए मुझे किसी शुक्राने और ईनाम की जरूरत नहीं है!''

जितना सौदागर मना करता जा रहा था, ऊंट बेचने वाला उतना ही ज़ोर दे रहा था! आख़िर में सौदागर ने मुस्कुराते हुए कहा असलियत में जब मैंने थैली वापस लाने का फैसला किया तो मैंने पहले से ही दो सबसे कीमती हीरे इसमें से अपने पास रख लिए थे!

इस कबूलनामें के बाद ऊंट बेचने वाला भड़क गया उसने अपने हीरे जवाहरात गिनने के लिए थैली को फ़ौरन खाली कर लिया! पर वह था बड़ी पशोपेश में बोला,''मेरे सारे हीरे तो यही है, तो सबसे कीमती दो कौन से थे जो आपने रख़ लिए?''

सौदागर बोला

''मेरी ईमानदारी और मेरी खुद्दारी''

हमें अपने अन्दर झांकना होगा कि हम में से किस किस के पास यह दो हीरे है। जिन जिन के पास यह दो हीरे है वह दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति हैं।

ईमानदार वही है जो अवसर मिलने पर भी ईमानदार रहे।

संकलित

नर्मदेश्वर शिवलिंग

नर्मदा नदी से निकले शिवलिंग को सबसे शक्तिशाली माना जाता है।

नर्मदेश्वर शिवलिंग के सम्बन्ध में एक धार्मिक कथा है। भारतवर्ष में गंगा, यमुना, नर्मदा और सरस्वती ये चार नदियां सर्वश्रेष्ठ हैं। इनमें भी इस भूमण्डल पर गंगा की समता करने वाली कोई नदी नहीं है। प्राचीनकाल में नर्मदा जी ने बहुत वर्षों तक तपस्या करके ब्रह्माजी को प्रसन्न किया। प्रसन्न होकर ब्रह्माजी ने वर मांगने को कहा। तब नर्मदाजी ने कहा 'ब्रह्मन'! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मुझे गंगाजी के समान कर दीजिए। ब्रह्माजी ने मुस्कराते हुए कहा - यदि कोई दूसरा देवता भगवान शिव की बराबरी कर ले, कोई दूसरा पुरुष भगवान विष्णु के समान हो जाए, कोई दूसरी नारी पार्वतीजी की समानता कर ले और कोई दूसरी नगरी काशीपुरी की बराबरी कर सके तो कोई दूसरी नदी भी गंगा के समान हो सकती है। ब्रह्माजी की बात सुनकर नर्मदा उनके वरदान का त्याग करके काशी चली गयीं और वहां पिलपिलातीर्थ में शिवलिंग की स्थापना करके तप करने लगीं। भगवान शंकर जी उन पर बहुत प्रसन्न हुए और वर मांगने के लिए कहा। तब नर्मदा ने कहा - भगवन! तुच्छ वर मांगने से क्या लाभ? बस आपके चरणकमलों में मेरी भक्ति बनी रहे। नर्मदा की बात सुनकर भगवान शंकर बहुत प्रसन्न हो गए और बोले - नर्मदे! तुम्हारे तट पर जितने भी प्रस्तरखण्ड (पत्थर) हैं, वे सब मेरे वर से शिवलिंग रूप हो जाएंगे। गंगा में स्नान करने पर शीघ्र ही पाप का नाश होता है, यमुना सात दिन के स्नान से और सरस्वती तीन दिन के स्नान से सब पापों का नाश करती हैं, परन्तु तुम दर्शनमात्र से सम्पूर्ण पापों

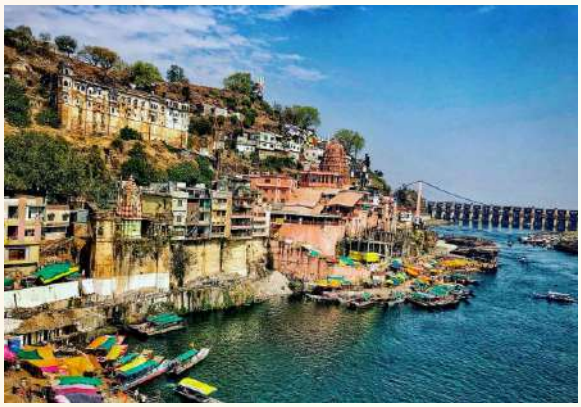

का निवारण करने वाली होगी। तुमने जो नर्मदेश्वर शिवलिंग की स्थापना की है, वह पुण्य और मोक्ष देने वाला होगा। भगवान शंकर उसी लिंग में विलीन हो गए। इतनी पवित्रता पाकर नर्मदा भी प्रसन्न हो गयीं। इसलिए कहा जाता है - 'नर्मदा का हर कंकर है शंकर'

हर हर महादेव।

(संकलित)

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी जिस मनुष्य के पास शुभ कर्मो रूपी टिकिट है, वह संसार की यात्रा आसानी से कर सकता है।

कन्हैया के आभूषण

एक भागवत कथा वाचक ब्राह्मण एक गांव में कथा वांच रहे थे। उस दिन उन्होंने नंदलाल, कन्हैया के सौंदर्य, उनके आभूषणों का बड़ा मन मोहक वर्णन किया।

उधर से गुजरता एक चोर भी कथा सुनने बैठ गया था। उसने जब आभूषणों के बारे में सुना तो उसे लालच आया। उस दिन की कथा समाप्त होने पर पंडितजी को खूब दक्षिणा मिली जिसे गठरी बनाकर वह लिए चले। जरा सुनसान में पहुंचे तो चोर सामने आ गया। उसने पूछा कि ये श्याम मनोहर,कृष्ण कहां रहते हैं। मुझे उनके घर से गहने चुराने हैं। पता बताओ। पंडितजी डर गए। उन्हें अपने सामान का भय हुआ। सो उन्होंने बुद्धि लगाई और कहा कि उनका पता मेरे झोले में लिखा है। यहां अंधेरा है थोड़ा उजाले में चलो तो देखके बताऊंगा । चोर तैयार हो गया। उसे जल्दी थी। पंडितजी ने और चतुराई की। अपना बोझा उसके सिर पर लाद दिया और ऐसे स्थान पर पहुंचकर रूके जहां लोगों को आवाजाही ज्यादा थी। फिर उन्होंने थैले में से पोथी खोली, देखने का स्वांग करते रहे। विचारकर बोले वृंदावन चले जाओ। मुझे जब कृष्ण जी मिले थे तो उन्होंने वृंदावन ही बताया था। चोर संतुष्ट हो गया और पंडितजी से आशीर्वाद लेकर विदा हुआ। चोर रास्ता पूछता, भटकता वृंदावन चल पड़ा। रास्ते में उसने बड़ी तकलीफें सहीं। जहां-जहां भी कन्हैया के मंदिर थे, उसमें दर्शन को गया। दर्शन क्या वह तो उनके आभूषणों को देखने जाता कि आखिर ऐसे आभूषण होंगे कन्हैया के पास। आभूषण निहारने में उसने इतने मंदिरों में भगवान की इतनी छवि देख ली कि उसे खुली आंखों से भी प्रभु नजर आते। रात को मंदिरों में ठहर जाता और वहीं कुछ प्रसाद खा लेता। माखन चोर भगवान आभूषण चोर पर रीझ गए। चोर के मन में प्रभु के आभूषणों के प्रति कामना ही भा गई। गोपाल उसे जगह-जगह दर्शन देते तरह-तरह के आभूषण से सजे बालकों के रूप में लेकिन वह उन्हें नहीं लेता। उसे तो असली गोपाल के आभूषण चाहिए थे।

चोर परेशान कि कब वह कन्हैया के धाम पहुंचे और कन्हैया परेशान कि वह इतनी दूर क्यों जा रहा है जब मैं राह में ही उसे सारे आभूषण दे रहा हूं। भगवान को भक्त से प्रेम हुआ तो भक्त के मन में बसा चोरी का भाव अनुराग में बदल गया। चोर गोकुल पहुंच गया। एक स्थान पर नदी किनारे भगवान ने उसे गाय चराते उसी रूप में दर्शन दिया जो उसने मंदिरों में देखी थी। जितनी छवि देखी थी सारी एक-एक करके दिखा दी। आभूषणों के साथ। चोर उनके पैरों में गिर पड़ा। प्रभु ने आभूषण उतारकर दिए और बोले- लो तुम इसके लिए व्यर्थ ही इतनी दूर चले आए। मैं तो कब से तुम्हें दे रहा था। चोर बोला- आपको देख लिया तो आभूषणों की चमक फीकी पड़ गई। अब तो आपको चुराउंगा।

भगवान हंसे- मुझे चुराओगे, कहां लेकर जाओगे ?

चोर बोला- वह तो नहीं पता सोचकर बताता हूं लेकिन आभूषण नहीं चाहिए। अब तो मुझे आपकी ही लालसा है। चोर सोचता रहा, प्रभु हंसते रहे। चोर ने बुद्धि दौड़ा ली लेकिन कोई स्थान ही न सूझा।

उसे चिंता थी कि इतनी मेहनत से वह इन्हें चुरा ले जाए और फिर सुरक्षा न कर पाए तो कोई और चुरा लेगा।

सोचते-सोचते उसे नींद आने लगी। उसको उपाय सूझा - जब तक मैं निर्णय नहीं कर लेता कि आपको कहां रखूंगा, आप मुझे रोज दर्शन देते रहो जिससे मुझे भरोसा रहे कि मेरी चोरी का सामान सुरक्षित है।

प्रभु खूब हंसे। उन्होंने कहा- ठीक है ऐसा ही होगा लेकिन तुम्हें कुछ आभूषण तो लेना होगा।

मना कर दिया। प्रभु रोज शाम उसे दर्शन देते। वह अपने गांव लौट आया।

पंडितजी कथा वांच रहे थे। उन्हें सारी बात बताई। यकीन न हुआ तो शाम को जब प्रभु दर्शन देने आए तो उनका एक आभूषण मांगकर दिखाया और साबित कर दिया।

पंडितजी बोले- भाई चोर असली साधू तो तू है। मैं तो कान्हा का नाम लेकर बस कथाएं सुनाता रहा और आजीविका जुटाता रहा लेकिन तुमने तो उन्हें ही जीत लिया।

लुटा कर खुद को जब आए तेरी बांकी अदाओं पर।।
दिल के मामले में, हम भी अमीर हो गए

संकलित

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

माता-पिता से माँगने वालों को भिखारी नहीं कहते, पर दूसरों से माँगने वाले को फकीर या भिखारी कहा जाता है

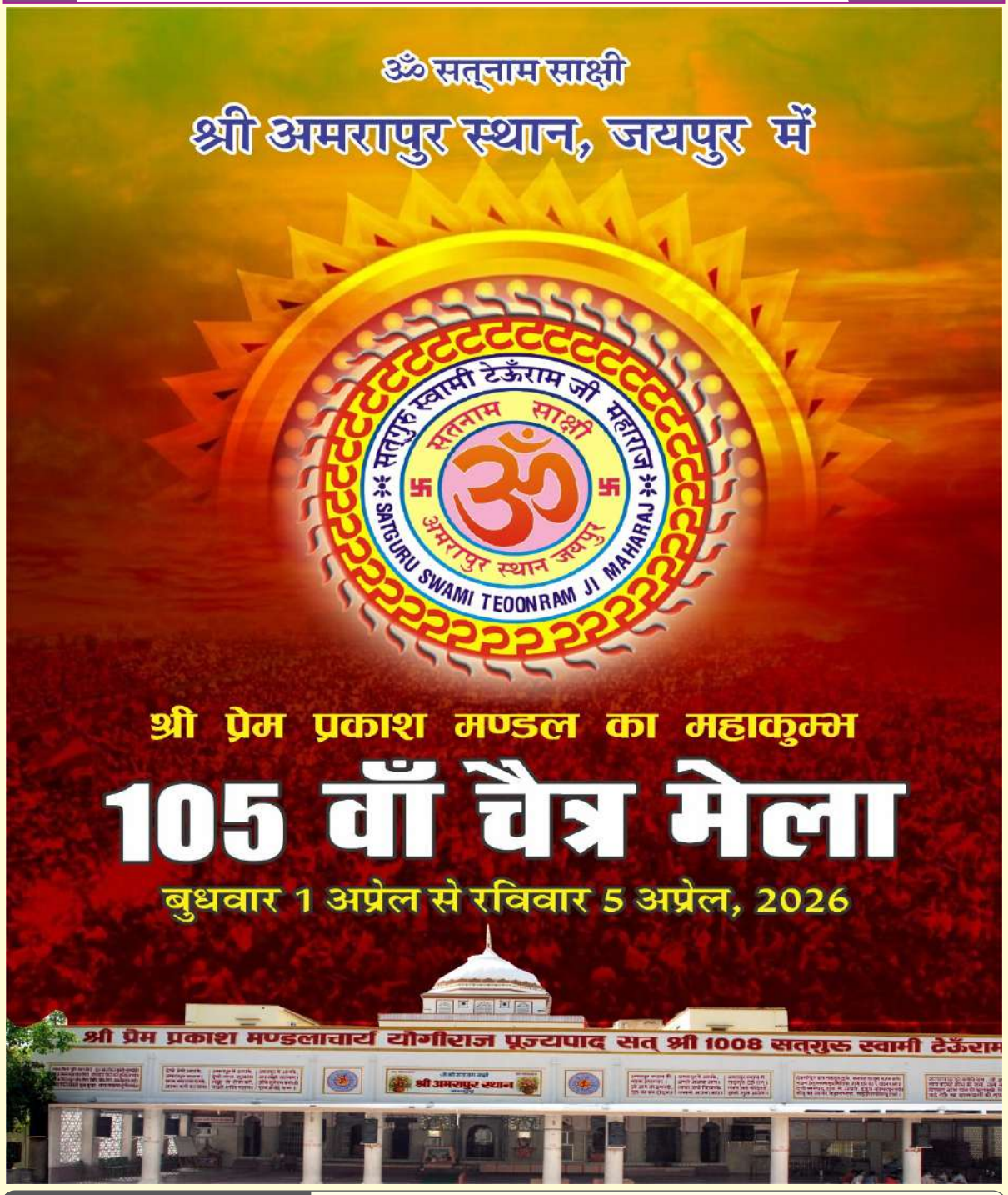

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

अगर यह मनुष्य चोला विषय भोगों में ही व्यतीत हो गया
तो यह जीव अंतिम समय में पश्चाताप करेगा और रोयेगा।

समाचार डायरी

श्री अमरापुर स्थान जयपुर में भक्तिभाव से मनाया गया बसंतोत्सव

जयपुर ।आस्था के पावन केंद्र श्री अमरापुर स्थान जयपुर में शुक्रवार २३ जनवरी २०२६ की पावन वेला में बसन्त पंचमी (बसंतोत्सव) का पावन पर्व परम पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज एवं पूज्य संत मण्डल की पावन उपस्थिति में श्रद्धा भाव से मनाया गया। प्रातः काल की मधुर वेला में प्रातः ६:३० बजे विधि विधान मंत्र उच्चारण द्वारा विद्या की देवी मां सरस्वती मैया की पूजा अर्चना कर पीले पुष्प एवं पीले पकवान मिष्ठान अर्पित किए गए। पूजा अर्चना के उपरांत गुरु महाराज जी के द्वारा विद्यार्थी वर्ग को अभिमंत्रित पेंसिल एवं कलम उपहार स्वरूप दी गई। सरस्तवी माता को पीले व्यंजन केसर खीर, पीले चावल, पीला हलवा, पीले लड्डू आदि का भोग अर्पित किया! तत्पश्चात नित्य नियम प्रार्थना के पश्चात ८.३० बजे से पूज्य गुरुदेव सतगुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज जी की अमोलक वाणी में भक्ति का रसपान हुआ। अपनी अमोलक वाणी में गुरु महाराज जी ने बताया कि बसंत ऋतुओं का राजा है। जिस प्रकार जीवन में संतो के आने से जीवन की सफलता सुगम हो जाती है उसी प्रकार से बसंत ऋतु के आगमन से प्रकृति की सुंदरता में चार चांद लग जाते है। सायं काल ५.३० बजे पुनः पूजा अर्चना कर मां सरस्वती की वंदना, पूजा कर पीले चावल का भोग अर्पित कर आरती की गई। संत महात्माओं ने सदगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा रचित बसंत महिमा भजन का पदगान किया! ऋतु ऋतु में है रंग साहेब का, बसंत ऋतु रंगवारी रे... बसंत की ऋतु है अति सुंदर, देख सभी हर्षाते है..... ऐसे अनेक बसंत पर्दो का संतो ने गान किया !

भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ ने श्री अमरापुर स्थान के दर्शन कर संतों से लिया आशीर्वाद

२४ जनवरी शुभ शनिवार को सदगुरु टेऊँराम चौथ महोत्सव के पावन अवसर पर भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ ने पावन तीर्थ श्री अमरापुर दरबार के दर्शन कर परम पूज्य गुरुवर स्वामी स्वामी भगत प्रकाश जी एवं संत मण्डली से आशीर्वाद लिया।

प्रेम प्रकाश मंडल-श्री अमरापुर स्थान के सेवा कार्यों से हुए प्रभावित-

शिष्टाचार भेंट में पूज्य संत मोहनलाल जी (संत श्री मोनूराम जी) ने भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ को श्री अमरापुर स्थान के सेवा कार्यों से अवगत करवाते हुए बताया कि विगत काफी वर्षों से प्रेम प्रकाश मंडल-श्री अमरापुर स्थान जयपुर द्वारा मोक्ष वाहन सेवा, मूर्चयूरी बॉक्स सेवा, श्री अमरापुरजल मंदिर, अन्न प्रसादम् सेवा, सतगुरु स्वामी टेऊँराम गौशाला, स्वामी टेऊँराम हॉस्पिटल, निःशुल्क मेडीकल कैम्प, बाल संस्कार शिविर आदि की सेवा के अनेक कार्य किए जा रहे हैं। श्री राठौड़ सभी सेवा प्रकल्पों से काफी प्रभावित हुए।

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश अगर जो शांति चाहते हो तो पहले आप शांति करो। आप भटक रहे हो तो शांति कैसे आयेगी। पहले आप शांति करो तो फिर शांति आए।

श्री अमरापुर स्थान जयपुर में चौथ महोत्सव मनाया गया

चौथ महोत्सव के अवसर पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया

जयपुर। श्री अमरापुर स्थान जयपुर में शुभ शनिवार दिनांक २४ जनवरी २०२६ को सिंध प्रांत के महान संत युगपुरुष आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का मासिक जन्मोत्सव चौथ पर्व एवं साप्ताहिक दिवस शनिवार पूर्ण श्रद्धा भक्ति भाव से मनाया गया। इस अवसर पर प्रातः काल की मधुर वेला में प्रातः ६बजे मंगला दर्शन में भक्तों ने पुष्प गुरुचरणों में अर्पित कर मंगल कामना मांगी। नित्य नियम प्रार्थना के पश्चात् प्रातः ८.०० बजे से पूज्य गुरुदेव सतगुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की अमोलक वाणी में भक्ति का रसपान हुआ। गुरदेव ने अपनी अमोलक वाणी में बताया कि सिंध प्रांत के खंडू शहर में शनिवार के दिन (सिंधी चौथ तिथि) सतगुरू महाराज का जन्म हुआ सतगुरु आसूराम साहिब से नाम की दीक्षा ले गुरु के वचनों की पालना करते हुए अपना जीवन समाज और धर्म की रक्षा में समर्पित किया। उसके उपलक्ष में रक्त दान शिविर का को आयोजन किया गया। स्वैच्छिक रक्तदान शिविर में लगभग ३५ यूनिट रक्त एकत्रित हुआ। चौथ पर्व के उपलक्ष में समाधि स्थल श्री मंदिर को सुंदर ऋतु पुष्पों से श्रृंगारित कर, मुख्य द्वार पर आकर्षण रंगोली बनाई गई। सुंदर श्रंगार और रंगोली पर भक्तगण मोहित हो उठे। सायंकाल ४.०० बजे महिला मंडल द्वारा सामूहिक चालीसा पाठ भजन संकीर्तन का आयोजन हुआ। गुरु महाराज की के सत्संग के पश्चात आचार्य श्री के विग्रह के समक्ष ५६ व्यंजन थाल अर्पित किया गया। पूज्य संतों द्वारा बताया गया कि मंगलकारी चौथ पर्व पर जो भी प्रेमी विश्वास रख के इस दर पर शीश झुकाता है उसकी सभी मनोकामना पूर्ण होती है।

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी मनुष्य जितनी अधिक इच्छाएँ करता है उतना ही अधिक दुःखी होता है।

अमरापुर गमन

श्री भगवानदास वीधानी

बैरागढ़/भोपाल। उदारचित्त, मृदुभाषी, कर्मठ श्री प्रेम प्रकाश आश्रम बैरागढ़ के प्रमुख सेवाधारी श्री भगवानदास वीधानी दिनांक १ जनवरी २०२६ को आचार्य प्रवर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के अभय श्रीचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारे।

श्री प्रेम प्रकाश मंडलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर सद्गुरु स्वामी श्री भगत प्रकाश जी महाराज एवं संत मंडली द्वारा दिवंगत आत्माओं को अमरापुर लोक में अपनी चरण-शरण में रखने हेतु आचार्य सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज व प्रभु परमात्मा से पल्लव पाकर प्रार्थना की गई।

मुझको मेरे सत्गुरू जी, चरणों में जगह देना....

धुन:- ऐ मेरे दिले नादां, तू गम से ना घबराना....

मुझको मेरे सत्गुरू जी, चरणों में जगह देना-2
मैं शरण पड़ा तेरी, मुझको अपना लेना, मुझको मेरे सत्गुरू जी.....

1. तेरे ही सहारे से, मेरी नाव संभलती है, तेरे एक ईशारे से, मेरी दुनियां चलती है,
   मेरा और नहीं कोई, मुझे गले लगा लेना, मुझको मेरे सत्गुरू जी, चरणों में जगह देना-2
   मैं शरण पड़ा तेरी, मुझको अपना लेना, मुझको मेरे सत्गुरू जी....

2. माना मैं नादां हूं, तेरी लगन लगा देना, झंझट इस दुनियां के, सब दूर भगा देना,
   नहीं बाधा रहे कोई, तेरा नाम जपा देना, मुझको मेरे सत्गुरू जी, चरणों में जगह देना-2
   मैं शरण पड़ा तेरी, मुझको अपना लेना, मुझको मेरे सत्गुरू जी....

3. मैं शरण पड़ा तेरी, कोई और ना दर सूझे, सभी प्रेम-प्रकाशियों को, तेरा अमरापुर सूझे,
   सतनाम साक्षी मन्त्र, नस-नस में रमा देना, मुझको मेरे सत्गुरू जी, चरणों में जगह देना-2
   मैं शरण पड़ा तेरी, मुझको अपना लेना, मुझको मेरे सत्गुरू जी....

4. जब तक ये स्वांस चलें, तेरा नाम ही गाउं में, गर जन्म मिले फिर से, अमरापुर आउं मैं,
   'वधवा' की भूलों को, तुम दिल से भुला देना, मुझको मेरे सत्गुरू जी, चरणों में जगह देना-2
   मैं शरण पड़ा तेरी, मुझको अपना लेना, मुझको मेरे सत्गुरू जी....

प्रेम प्रकाशी दास हरकेश वधवा
समालखा मण्डी, हरियाणा

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

जिस प्रकार कोई भी व्यापार धंधा या नौकरी धन प्राप्ति के लिए किया जाता है, उसी प्रकार गुरु भी परमात्मा की प्राप्ति के लिए किया जाना चाहिये न कि सांसारिक सुखों की प्राप्ति के लिये।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर सत्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

का यात्रा कार्यक्रम जनवरी 2025 से फरवरी 2026 तक

21–22 जनवरी 2026	हरिद्वार
23–24–25 जनवरी 2026	जयपुर
26 जनवरी 2026	नागपुर प्रातःकाल सत्संग
26 जनवरी 2026	अमरावती सायंकाल सत्संग
27 जनवरी 2026	अमरावती
28–29 जनवरी 2026	नासिक
30–31 जनवरी 2026	प्रयागराज
01 फरवरी 2026	भरतपुर
02–03 फरवरी 2026	अलीगढ़
04 से 07 फरवरी 2026	आगरा
08–09 फरवरी 2026	मुरैना
10–11 फरवरी 2026	डबरा
12 फरवरी 2026	झांसी–दतिया
13 से 16 फरवरी 2026	ग्वालियर
17–18 फरवरी 2026	अनिर्णीत
19 फरवरी 2026	यात्रा
20 से 23 फरवरी 2026	दुबई
24 फरवरी 2026	यात्रा

व्रत–पर्व–उत्सव

18 जनवरी 2026– रविवार– मौनी अमावस्या
20 जनवरी 2026– मंगलवार– चन्द्र दर्शन
23 जनवरी 2026–शुक्रवार– बंसत पंचमी, सरस्वती पूजा
24 जनवरी 2026– शनिवार– चौथ (मंगलमूर्ति सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज का मासिक अवतरण दिवस)
26 जनवरी 2026–सोमवार– गणतंत्र दिवस
29 जनवरी 2026–गुरुवार– एकादशी
01 फरवरी 2026–रविवार– माघी पूर्णिमा
05 फरवरी 2026–गुरुवार– गणेश चर्तुथी
13 फरवरी 2026–शुक्रवार– एकादशी
15 फरवरी 2026– रविवार– महाशिवरात्री
17 फरवरी 2026– मंगलवार– अमावस्या
18 फरवरी 2026– बुधवार– चन्द्र दर्शन
22 फरवरी 2026–रविवार–चौथ (मंगलमूर्ति सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज का मासिक अवतरण दिवस)
27 फरवरी 2026–शुक्रवार– एकादशी

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश राम–नाम का भजन करने से मनुष्य में परम उदारता व परोपकार के गुण अनायास ही आ जाते हैं।

डाक पंजीकृत संख्या ग्वालियर/40020293/2020-22
रजि० समाचार पत्र-रजि० नं० MP/Hindi/2008/25627

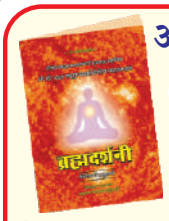

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज द्वारा रचियलु

'ब्रह्मदर्शनी'

सिंधीअ में समुझाणी

-प्रो. लछमण परसराम हर्दवाणी (पुणे)

पोएं दिसम्बर २०२५ अंक खां अगिते-

।। दोहा ।।

राम नाम जप प्रेम से, पाओ सुख का धाम।
कह टेऊँ बिन राम के, जीवन है बेकाम।। 19 ।।

राम जो, परमेश्वर जो नामु (नालो) जपण लाइ उपदेश कंदे सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज चवनि था, " हे मनुष! तूं प्रेम सां राम जो नालो जपि. नामु जपण सां तोखे सुख जो धामु/घरु (परमात्मा) प्रापति थींदो. राम जो, ईश्वर जो नालो जपण बिना हीउ जीवनु अजायो, व्यर्थ, कंहिं न कम जो आहे."

राम (ईश्वर) जो नामु मनुष खे, भक्त खे निमाणो, नम्र बणाए थो, नम्रता खां- सवाइ आत्माराम प्रापति कोन थी सघंदो. तंहिंकरे ईश्वर जो नालो सदाईं सुमिरनु करणु घुरिजे. नामु सभिनी पापनि जो नासु कंदडु हूंदो आहे. भगवान जो नामु मंतरनि जो बि मंतरु, नामु आहे सुख जो सागरु, नामु आहे भगिती करण जो मुफ़्त साधनु, नामु आहे भवसागरु तारींदडु जहाजु! मुक्तीअ जो ई बियो नालो आहे नामु. नामु ई देवु आहे, ईश्वरु आहे ; नामु ई तीर्थु आहे ; नामु ई धरमु ऐं करमु आहे, रूपु ऐं स्वरूपु आहे ; नामु ई उपासना ऐं अनुष्ठानु आहे, साधनु ऐं साध्य आहे, योगु ऐं याग आहे. ईश्वर जो नामु ई भगिती ऐं शक्ती आहे. जेको परमेश्वर जो नामु जपण में बुडी वञे थो, उहो संसार में तरी वञे थो. सभिनी वेदनि जो सारु आहे भगवंत जो नामु जपणु. नामु भगवान ऐं भगत जे विचवारी पुलि आहे. नामु सगुणु बि आहे त निर्गुण बि आहे. ईश्वर जो नामु वाणीअ सां उचारणु घुरिजे, कननि सां बुधणु घुरिजे ऐं बुद्धीअ सां चिंतणु घुरिजे. मनुष जे मन में नाम जो जपु हुअणु घुरिजे. राम-नाम जो जपु प्रेम सां, नियम/नेम सां, निश्चय सां, उत्साह ऐं लगन सां, मन सां करणु घुरिजे. मनुष- जीवनु नाम-सुमिरनु करण लाइ मिलियो आहे. नाम जो सुमरण, मृत्यूअ खां अमरता डांहुं नींदड़ नाम जो जपु करण लाइ संत बि चवनि था. महाराष्ट्र जो महान संतु श्रीसमर्थ रामदासु पिणु चवे थो, **"प्रभाते मनीं राम चिंतीत जावा। पुढे वैखरीं राम आधीं वदावा।'** अर्थात् प्रभात जो मन सां राम (ईश्वर) जो चिंतनु करणु घुरिजे. पोइ वाणीअ सां ईश्वर जो नालो खणणु घुरिजे, भजनु करणु घुरिजे. संत तुलसीदास राम नामु जपण लाइ चयो आहे, नाम जे जप सां ऊन्दहि अन्धकार दूर थी वेंदो. ऐं परम प्रकाश जी प्राप्ती थीन्दी.

राम नाम मणि दीप धरि, जीह देहरी द्वारु ।
तुलसी भीतर बाहरेहुं, जो चाहसि उजिआरु ।।
रसना तो तब लग भली, जब लग मुख में राम ।
ना तो काट निकालिए, भलो न मुख में चाम ।। (हलदंडु)

सूचना

समस्त सम्माननीय सदस्यों के सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, शुल्क अवधि समाप्त होने की सूचना को आपके पते के ऊपर **LAST COPY** लिखकर उसे **BOLD** करके दर्शाया गया है. पत्रिका की निरंतर प्राप्ति के लिये अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को यथाशीघ्र करा लेना चाहिए.

– व्यवस्थापक

किसी कारणवश वितरण न होने पर निम्न पते पर वापस करें-

सम्पादक, प्रेम प्रकाश सन्देश
प्रेम प्रकाश आश्रम,
गाढ़वे की गोठ, लश्कर,
ग्वालियर 474001 (म.प्र.)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक : संतोष पंजवानी द्वारा मुद्रक : सुनील पंजवानी, सन्नी प्रिन्टर्स, मामा का बाजार, लश्कर, ग्वालियर से मुद्रित करवाकर, 401-झूलेलाल अपार्टमेंट, कृष्णा एन्क्लेव,समाधिया कॉलोनी,तारागंज, लश्कर, ग्वालियर-474001 से प्रकाशित किया गया।
कार्यालय: प्रेम प्रकाश सन्देश, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर-474001
(कार्यालय फोन 0751-4045144 पर सम्पर्क समय प्रातः 8 से 10 बजे तक (तात्कालिक व्यवस्था)
सम्पादक : प्रहलाद सबनानी
प्रबन्ध सम्पादक : शंकरलाल सबनानी